CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2017 with Solution PDF-Set 2/2 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 6, 7, 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

किसी देश का लोक जागरूक हो इसके लिए उसका चिंतनशील, संवेदनशील, अनुभवी, शक्तिशाली और क्रियाशील होना आवश्यक है। ये सभी गुण तभी आते हैं, जब लोग समाज के सामने आने वाली समस्याओं पर सोचते हैं, विचारते हैं और समाधान के नए-नए उपाय खोजते हैं। यदि किसी लोकतंत्र के लोग अपनी-अपनी घरेलू या व्यावसायिक समस्याओं से अलग कुछ सोच ही न पाते हों तो वहाँ लोकतंत्र कभी सफल नहीं हो सकता। यदि भारतीय जन भारत में फैले आतंकवाद पर, भ्रष्टाचार पर, संस्कारों पर, दूरदर्शन के कार्यक्रमों पर, नए फैशन पर, नई बीमारियों पर या नई जीवन शैलियों पर कोई मत ही नहीं रखते तो वे अपना तंत्र कैसे स्थापित करेंगे? भारत का समाज आज लिंग-भेद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद जैसे मुद्दों पर अनेक समस्याएँ झेल रहा है। इन पर लोकमत जानने और बनाने का काम मीडिया के हाथों में है।

प्रश्न यह है कि मीडिया के विविध रूप भारत के लोकमानस को शिक्षित, संस्कारित और जाग्रत करने के लिए क्या कर रहे हैं? मीडिया का एक काम है – जनता को अधुनातन जानकारियों से युक्त बनाना। इस काम में हमारे अनेक निजी तथा सरकारी चैनल प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं। वे लोकमन को छूती हुई सामान्य से लेकर नई घटनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। परंतु कुछ समाचार-पत्र और चैनल जानबूझ कर सनसनी फैलाने वाली सूचनाओं द्वारा जनता को क्षुब्ध, आतंकित या भयभीत कर रहे हैं। उन पर श्लीलता-अश्लीलता तथा गोपनीयता की सभी सीमाओं को लाँघने का भी आरोप लगता रहता है। इस पर संयम रखना स्वयं मीडिया-कर्मियों का दायित्व है। कभी-कभी वे ऐसी सामग्री प्रदर्शित करते हैं जो शत्रुदेश के लिए हितकर हो सकती है या कभी जातीय विद्वेष भड़क सकता है। ऐसी भूमिका देश हित में नहीं हो सकती इसलिए उससे बचना चाहिए।

मीडिया की सर्वाधिक प्रभावी भूमिका विभिन्न चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कार या सर्वेक्षणों के माध्यम से पूरी होती है। जब आतंकवाद, भ्रष्टाचार. विदेश नीति, परमाणु-बिजली, अर्थव्यवस्था जैसे प्रबल मुद्दों पर जनता और विशेषज्ञ अपनी राय देते हैं तो जनता का भी 'मन' जाग्रत होता है। यही लोक-इच्छा लोकतंत्र को मज़बूत करती है। [15 अंक]

1(क). गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में मीडिया के माध्यम से जनजागरण और लोकतंत्र की मजबूती का संबंध स्पष्ट किया गया है।
- उत्तर के लिए गद्यांश के संबंधित कथन और उसके मुख्य आशय को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानना पहले अनुच्छेद में जागरूक नागरिकों की आवश्यकता, दूसरे में मीडिया के दायित्व और अंतिम अनुच्छेद में लोकमत से लोकतंत्र की मजबूती का वर्णन है। इसलिए शीर्षक में मीडिया और लोकतंत्र दोनों का संबंध आना चाहिए।

चरण 2: शीर्षक की उपयुक्तता देखना केवल भ्रष्टाचार या आतंकवाद शीर्षक रखने से चर्चा का एक उदाहरण ही व्यक्त होगा। पूरे गद्यांश का आशय मीडिया द्वारा लोकमानस को जागरूक करके लोकतंत्र को सुदृढ़ करना है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है — लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और उसी आशय को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखें।

1(ख). लोक की जागरूकता से क्या तात्पर्य है? इसके लिए क्या आवश्यक है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जागरूकता का अर्थ केवल घटनाओं की सूचना रखना नहीं, बल्कि सामाजिक समस्याओं पर स्वतंत्र विचार करना भी है।
- उत्तर के लिए गद्यांश के संबंधित कथन और उसके मुख्य आशय को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: जागरूकता का आशय लोक की जागरूकता से तात्पर्य जनता का देश और समाज की समस्याओं के प्रति सजग होना, उन पर अपना मत बनाना तथा उनके समाधान के उपाय सोचना है। गद्यांश में घरेलू और व्यावसायिक समस्याओं से आगे सोचने की आवश्यकता बताई गई है। इससे नागरिक सामूहिक जीवन से जुड़ते हैं।

चरण 2: आवश्यक गुण और अभ्यास इसके लिए जनता का चिंतनशील, संवेदनशील, अनुभवी, शक्तिशाली और क्रियाशील होना आवश्यक है। ये गुण सामाजिक समस्याओं पर सोचने-विचारने और समाधान के नए-नए उपाय खोजने से विकसित होते हैं। इस प्रकार विचार और सक्रियता दोनों जागरूक लोक के आधार हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लोक-जागरूकता सामाजिक समस्याओं के प्रति सजग विचार और समाधानशील सक्रियता है; इसके लिए चिंतनशीलता, संवेदनशीलता, अनुभव, शक्ति और क्रियाशीलता आवश्यक हैं।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और उसी आशय को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखें।

1(ग). लोकमत बनाने का मुख्य काम कौन करता है? कैसे? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकमत का निर्माण सही सूचनाओं तथा विभिन्न दृष्टिकोणों पर विचार करने से होता है।
- उत्तर के लिए गद्यांश के संबंधित कथन और उसके मुख्य आशय को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: मुख्य माध्यम पहचानना गद्यांश में स्पष्ट कहा गया है कि लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी समस्याओं पर लोकमत जानने और बनाने का काम मीडिया के हाथों में है। अतः लोकमत बनाने का मुख्य काम मीडिया करता है। समाचार-पत्र और निजी तथा सरकारी चैनल जनता तक विभिन्न घटनाओं की जानकारी पहुँचाते हैं।

चरण 2: लोकमत निर्माण की प्रक्रिया मीडिया जनता को अधुनातन जानकारी देता है और चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों तथा सर्वेक्षणों के माध्यम से जनता और विशेषज्ञों की राय सामने लाता है। इससे लोग सार्वजनिक मुद्दों पर सोचते हैं, विभिन्न मतों को समझते हैं और अपनी राय बनाते हैं। इसी प्रक्रिया से लोकमानस जाग्रत होता है।

चरण 3: निष्कर्ष लोकमत बनाने का मुख्य काम मीडिया करता है। वह नवीन जानकारी तथा चर्चा, वाद-विवाद, साक्षात्कार और सर्वेक्षणों से लोगों को सोचने और अपना मत बनाने के लिए प्रेरित करता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और उसी आशय को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखें।

1(घ). लोकतंत्र किसे कहते हैं? वह कब असफल हो जाता है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में लोकतंत्र की सफलता को निजी हितों से आगे बढ़कर सार्वजनिक प्रश्नों पर सोचने से जोड़ा गया है।
- उत्तर के लिए गद्यांश के संबंधित कथन और उसके मुख्य आशय को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: लोकतंत्र का आशय लोकतंत्र जनता की इच्छा और मत पर आधारित जनता का शासन-तंत्र है। गद्यांश का प्रश्न कि लोग अपना तंत्र कैसे स्थापित करेंगे, जनता की इसी निर्णायक भूमिका को सामने रखता है। इसके अंतिम वाक्य में भी लोक-इच्छा को लोकतंत्र की मजबूती का आधार बताया गया है।

चरण 2: असफलता की स्थिति जब लोग केवल अपनी घरेलू या व्यावसायिक समस्याओं में उलझे रहते हैं और देश-समाज की समस्याओं पर सोच नहीं पाते, तब लोकतंत्र सफल नहीं होता। आतंकवाद, भ्रष्टाचार और जीवन-शैली जैसे सार्वजनिक विषयों पर कोई मत न रखने से जागरूक लोकमत नहीं बनता। जनता की ऐसी निष्क्रियता तंत्र को कमजोर करती है।

चरण 3: निष्कर्ष लोकतंत्र जनता की इच्छा पर आधारित शासन-तंत्र है। जनता जब निजी समस्याओं से बाहर निकलकर सार्वजनिक समस्याओं पर विचार और मत-निर्माण नहीं करती, तब वह असफल हो जाता है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और उसी आशय को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखें।

1(ङ). मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका कब दिखाई पड़ती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सूचना देने के साथ संयम, गोपनीयता और देशहित का ध्यान रखना मीडिया का दायित्व है।
- उत्तर के लिए गद्यांश के संबंधित कथन और उसके मुख्य आशय को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: सनसनी और मर्यादा का उल्लंघन मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका तब दिखाई पड़ती है, जब कुछ समाचार-पत्र और चैनल जानबूझकर सनसनी फैलाने वाली सूचनाएँ देकर जनता को क्षुब्ध, आतंकित या भयभीत करते हैं। श्लीलता-अश्लीलता और गोपनीयता की सीमाएँ लाँघना भी इसी भूमिका का उदाहरण है। गद्यांश इस पर स्वयं मीडिया-कर्मियों से संयम की अपेक्षा करता है।

चरण 2: देश और समाज को होने वाली हानि जब मीडिया ऐसी सामग्री दिखाता है जो शत्रुदेश के लिए हितकर हो सकती है या जिससे जातीय विद्वेष भड़क सकता है, तब उसका व्यवहार देशहित के विरुद्ध हो जाता है। सूचना के संभावित सामाजिक प्रभाव की उपेक्षा उसकी गैर-जिम्मेदारी को दिखाती है। ऐसी सामग्री से बचना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सनसनी और भय फैलाने, श्लीलता तथा गोपनीयता की सीमाएँ लाँघने और शत्रुदेश को लाभ या जातीय विद्वेष को बढ़ावा देने वाली सामग्री प्रस्तुत करने पर मीडिया की अनुत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका दिखाई पड़ती है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और उसी आशय को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखें।

1(च). मीडिया की भूमिका कैसे कार्यक्रमों से पूरी होती है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनता और विशेषज्ञों के विचारों का आदान-प्रदान लोकमानस को जाग्रत करता है।
- उत्तर के लिए गद्यांश के संबंधित कथन और उसके मुख्य आशय को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: कार्यक्रमों के रूप मीडिया की सर्वाधिक प्रभावी भूमिका विभिन्न चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों के माध्यम से पूरी होती है। इन कार्यक्रमों में केवल घटना की सूचना नहीं दी जाती, बल्कि सार्वजनिक मुद्दों के बारे में जनता और विशेषज्ञों की राय भी सामने आती है। गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में इन्हीं माध्यमों का उल्लेख है।

चरण 2: विषय और प्रभाव आतंकवाद, भ्रष्टाचार, विदेश नीति, परमाणु-बिजली और अर्थव्यवस्था जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-विमर्श जनता को सोचने के लिए प्रेरित करता है। विभिन्न मत सुनकर उसका मन जाग्रत होता है और लोक-इच्छा बनती है। यही जागरूक लोक-इच्छा लोकतंत्र को मजबूत करती है। इसलिए इन कार्यक्रमों की भूमिका विशेष प्रभावी बताई गई है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया की भूमिका जनहित के मुद्दों पर चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों और सर्वेक्षणों से पूरी होती है। इनमें जनता और विशेषज्ञों की राय लोकमानस को जाग्रत कर लोकतंत्र को मजबूत बनाती है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और उसी आशय को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखें।

1(छ). आज भारत का समाज किन समस्याओं से जूझ रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अपठित गद्यांश के उत्तर में लेखक द्वारा उल्लिखित समस्याओं को पहचानना आवश्यक है।
- उत्तर के लिए गद्यांश के संबंधित कथन और उसके मुख्य आशय को आधार बनाना चाहिए।

चरण 1: प्रत्यक्ष उल्लेख ढूँढ़ना गद्यांश के पहले अनुच्छेद में स्पष्ट कहा गया है कि भारत का समाज आज लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसे मुद्दों पर अनेक समस्याएँ झेल रहा है। इसलिए उत्तर में इन तीन समस्याओं को प्रमुख रूप से लिखना चाहिए। लिंग-भेद सामाजिक असमानता, भ्रष्टाचार सार्वजनिक जीवन की अनियमितता और आतंकवाद सुरक्षा से जुड़े संकट का संकेत देते हैं।

चरण 2: प्रसंग की सीमा बनाए रखना इसी अनुच्छेद में नई बीमारियों और नई जीवन-शैलियों जैसे विषयों पर जनता के मत की आवश्यकता भी बताई गई है। किंतु समाज की समस्याओं वाली पंक्ति में लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद सीधे नामित हैं। उत्तर इन्हीं पर केंद्रित रखने से लेखक का आशय स्पष्ट रहता है और पाठ से बाहर की सूची जोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती।

चरण 3: निष्कर्ष आज भारत का समाज मुख्यतः लिंग-भेद, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी समस्याओं से जूझ रहा है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्दों को गद्यांश की संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और उसी आशय को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखें।

1(ज). लोकतंत्र की स्थापना और विकास में मीडिया का क्या महत्त्व है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लोकतंत्र की मजबूती जागरूक और विचारशील लोकमत पर निर्भर करती है।
- मीडिया सूचना, चर्चा और विशेषज्ञों के विचार जनता तक पहुँचाकर लोकमत बनाता है।

चरण 1: लोकतंत्र की आवश्यकता समझना गद्यांश के अनुसार जनता का केवल घरेलू और व्यावसायिक समस्याओं तक सीमित रहना लोकतंत्र की सफलता में बाधक है। लोगों को सार्वजनिक समस्याओं पर सोचने, अपनी राय बनाने और समाधान खोजने की आवश्यकता होती है। इसलिए लोकतंत्र की स्थापना के लिए जागरूक लोकमानस आवश्यक है।

चरण 2: मीडिया का योगदान बताना मीडिया लोगों को नवीन घटनाओं और जानकारियों से परिचित कराता है। वह चर्चाओं, वाद-विवादों, साक्षात्कारों तथा सर्वेक्षणों में जनता और विशेषज्ञों के विचार सामने लाता है। आतंकवाद, भ्रष्टाचार और अर्थव्यवस्था जैसे मुद्दों पर इससे लोकमत बनता है, जनता का मन जाग्रत होता है और लोक-इच्छा लोकतंत्र को मजबूत करती है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडिया जनता को सूचित और जागरूक करके तथा सार्वजनिक मुद्दों पर लोकमत बनाकर लोकतंत्र की स्थापना और विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सूचना देने और चर्चा के माध्यम से लोकमत बनाने, दोनों भूमिकाएँ जोड़ें।

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

देश नहीं होता है केवल
सीमाओं से घिरा मकान
देश नहीं होता है कोई
सजी हुई ऊँची दूकान
देश नहीं क्लब जिसमें बैठे
करते रहें सदा हम मौज
देश नहीं होता बंदूकें
देश नहीं होता है फौज
जहाँ प्रेम के दीपक जलते
जहाँ इरादे नहीं बदलते
हर दिल में अरमान मचलते
सज्जन सीना ताने चलते,
वही हुआ करता है देश।
पहले हम खुद को पहचानें
फिर पहचानें अपना देश
एक दमकता सत्य बनेगा,
नही रहेगा सपना देश।।

[5 अंक]

2(क). कवि के विचार में किन बातों को देश नहीं माना जा सकता? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि देश के बाहरी रूप और उसकी मानवीय पहचान में भेद करता है।
- उत्तर के लिए काव्यांश में बार-बार आए निषेध को पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: निषेध वाली पंक्तियाँ पहचानना कवि कहता है कि देश केवल सीमाओं से घिरा मकान, सजी हुई ऊँची दुकान अथवा मौज करने का क्लब नहीं है। ये देश को मात्र भौतिक स्थान, प्रदर्शन या मनोरंजन तक सीमित कर देते हैं।

चरण 2: शक्ति संबंधी उल्लेख जोड़ना काव्यांश में बंदूकों और फौज को भी अपने-आप में देश नहीं माना गया है। कवि के लिए केवल भूभाग, वैभव, मौज या सैन्य शक्ति से देश की पूरी पहचान नहीं बनती।

चरण 3: निष्कर्ष कवि के अनुसार केवल सीमाओं से घिरा मकान, सजी ऊँची दुकान, मौज का क्लब, बंदूकें और फौज देश नहीं हैं।

त्वरित सुझाव: काव्यांश में आए सभी निषेध साथ लिखें; केवल सीमा या सेना का उल्लेख करके उत्तर अधूरा न छोड़ें।

2(ख). देश की पहचान क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि की दृष्टि में देश की पहचान उसके लोगों के मानवीय गुणों से बनती है।
- सकारात्मक पहचान उन पंक्तियों में है जिनकी शुरुआत जहाँ से होती है।

चरण 1: मानवीय गुण पहचानना जहाँ लोगों के हृदय में प्रेम हो, उनके इरादे अटल हों और प्रत्येक दिल में कुछ कर दिखाने के अरमान

हों, वहाँ देश की वास्तविक भावना दिखाई देती है।

चरण 2: सज्जनों की स्थिति समझना कवि सज्जनों के सीना तानकर चलने को भी देश की पहचान मानता है। इससे संकेत मिलता है कि अच्छे लोग सम्मान और आत्मविश्वास के साथ जीते हों।

चरण 3: निष्कर्ष प्रेम, अटल संकल्प, लोगों के मन में उमंग और आकांक्षाएँ तथा सज्जनों का सम्मानपूर्ण निर्भय जीवन देश की सच्ची पहचान है।

त्वरित सुझाव: जहाँ से आरंभ होने वाली पंक्तियों के चार गुण छाँटकर देश की पहचान स्पष्ट करें।

2(ग). आशय स्पष्ट कीजिए "जहाँ प्रेम के दीपक जलते, जहाँ इरादे नहीं बदलते"। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रेम के दीपक पारस्परिक प्रेम और सद्भाव का बिंब हैं।
- इरादे न बदलना संकल्प की दृढ़ता का संकेत है।

चरण 1: प्रेम के दीपक का आशय बताना प्रेम के दीपक जलने का अर्थ है कि लोगों के मन में एक-दूसरे के प्रति प्रेम और अपनापन हो। जिस प्रकार दीपक प्रकाश फैलाता है, उसी प्रकार प्रेम समाज में मेल-जोल और सद्भाव फैलाता है।

चरण 2: स्थिर इरादों का आशय बताना इरादे नहीं बदलने का अर्थ है कि लोग अपने अच्छे संकल्पों पर दृढ़ रहें। वे बार-बार लक्ष्य से न भटकें और देश के निर्माण की आकांक्षा को स्थिर रखें।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों का आशय है कि सच्चे देश में लोगों के बीच प्रेम और सद्भाव हो तथा वे अपने संकल्पों पर दृढ़ रहें।

त्वरित सुझाव: दीपक का शाब्दिक वर्णन न करें; उसे प्रेम के प्रकाश और दूसरे पद को दृढ़ संकल्प से जोड़ें।

2(घ). बंदूकों और फौजों का होना कब सार्थक है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि केवल बंदूकों और फौज को देश की पूर्ण पहचान नहीं मानता।
- सैन्य शक्ति की सार्थकता को कविता के प्रेम और सज्जनों के निर्भय जीवन के भाव से जोड़ना चाहिए।

चरण 1: कवि का मूल भेद समझना बंदूकें और फौज बाहरी शक्ति के साधन हैं। मात्र इनके होने से वह मानवीय समुदाय नहीं बन जाता जिसे कवि देश कहता है। उसके लिए प्रेम और दृढ़ इरादे भी आवश्यक हैं।

चरण 2: सार्थक उद्देश्य स्पष्ट करना बंदूकों और फौज का होना तब सार्थक है जब वे देश और उसके लोगों की रक्षा करें, जिससे प्रेमपूर्ण जीवन बना रहे और सज्जन निर्भय होकर सीना तानकर चल सकें। यह अर्थ कविता की सकारात्मक देश-कल्पना से निकलता है।

चरण 3: निष्कर्ष बंदूकें और फौज तब सार्थक हैं जब वे देश की रक्षा करके लोगों के प्रेमपूर्ण और निर्भय जीवन को सुरक्षित रखें।

त्वरित सुझाव: सैन्य शक्ति को कविता में बताए प्रेम और सज्जनों के निर्भय जीवन की रक्षा से जोड़कर उत्तर दें।

2(ङ). आपके विचार से खुद को पहचानना क्यों महत्त्वपूर्ण है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि देश को पहचानने से पहले स्वयं को पहचानने की प्रेरणा देता है।
- स्वयं की पहचान व्यक्ति को अपने गुणों, क्षमताओं और उत्तरदायित्वों का बोध कराती है।

चरण 1: आत्मपहचान का महत्त्व बताना मेरे विचार से स्वयं को पहचानने पर हमें अपनी क्षमताओं, इच्छाओं और कमियों का ज्ञान होता है। तब हम समझ सकते हैं कि देश के लिए हम क्या कर सकते हैं और हमारे व्यवहार में कौन-सा सुधार आवश्यक है।

चरण 2: देश की कल्पना से संबंध जोड़ना कवि पहले खुद को और फिर देश को पहचानने के लिए कहता है। अपने आचरण में प्रेम और संकल्प लाने वाला व्यक्ति देश की कल्पना को केवल सपना रहने देने के बजाय उसे सच बनाने में सहयोग कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष खुद को पहचानना इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि इससे अपनी क्षमता और जिम्मेदारी समझकर हम देश के निर्माण में सार्थक योगदान दे सकते हैं।

त्वरित सुझाव: अपने विचार को कविता की पहले स्वयं को पहचानने और देश को सपना न रहने देने वाली पंक्तियों से जोड़ें।

3(क). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : मैं और मेरा देश [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं।
- राष्ट्र के प्रति व्यक्तिगत दायित्व और नागरिक चेतना विषय के प्रमुख पक्ष हैं। भाषा सरल, विचार मौलिक और अनुच्छेद परस्पर संबद्ध होने चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले विषय का अर्थ स्पष्ट करें। इसके बाद मुख्य विचारों को अलग-अलग अनुच्छेदों में विकसित करें और अंत में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करें। शीर्षक के नीचे सीधे निबंध लिखें; पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर न दें।

चरण 2: विचारों का क्रम देश से अपने संबंध और विविधता में एकता से आरंभ करें। फिर विद्यार्थी के कर्तव्य, सामाजिक चुनौतियों तथा अपने संकल्प को जोड़ें। देशप्रेम को दैनिक जीवन के ठोस आचरण से स्पष्ट करें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध मैं और मेरा देश

मेरा देश भारत केवल मानचित्र पर खिंची सीमाओं का नाम नहीं है। वह मेरी भाषा, स्मृतियों, संस्कृति और आशाओं का आधार है। इसकी मिट्टी से मेरा जीवन जुड़ा है और इसके भविष्य से मेरा भविष्य। इसलिए देश से प्रेम मेरे लिए केवल भावना नहीं, अपने आचरण को बेहतर बनाने का संकल्प भी है।

भारत की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विविधता है। यहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म, वेशभूषाएँ और जीवन-पद्धतियाँ हैं। फिर भी सुख-दुख में एक-दूसरे का साथ देने की भावना हमें जोड़ती है। हिमालय से समुद्र तक फैली प्राकृतिक संपदा तथा ज्ञान, कला और स्वतंत्रता-संग्राम की विरासत मुझे गर्व से भर देती है। यह गर्व दूसरों को छोटा समझने का नहीं, अपनी जिम्मेदारी पहचानने का आधार होना चाहिए।

मेरे देश ने मुझे शिक्षा पाने, विचार व्यक्त करने और सम्मान के साथ जीने की संभावनाएँ दी हैं। इन अधिकारों के साथ मेरे कर्तव्य भी जुड़े हैं। विद्यार्थी के रूप में मेरा पहला काम ईमानदारी से पढ़ना, अनुशासन अपनाना और अपनी क्षमताओं का विकास करना है। सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, स्वच्छता, जल की बचत और यातायात के नियमों का पालन भी देशसेवा के ही रूप हैं।

देश की कठिनाइयों से आँखें मूँद लेना देशप्रेम नहीं है। गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ हमें मिलकर दूर करनी होंगी। मैं किसी के धर्म, जाति या आर्थिक स्थिति के कारण उसका अपमान नहीं करूँगा। जरूरतमंद की सहायता और असहमति का सम्मान करके मैं अपने आसपास बेहतर समाज बना सकता हूँ।

मैं ऐसा भारत देखना चाहता हूँ जहाँ विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे और प्रकृति सुरक्षित रहे। इस सपने को साकार करने के लिए मुझे अपने हिस्से का काम आज से करना होगा। मेरा देश मेरी पहचान है और उसका निर्माण मेरी जिम्मेदारी। मेरे छोटे, सच्चे और

निरंतर प्रयास ही देशप्रेम को सार्थक बनाएँगे।

चरण 4: निष्कर्ष देशप्रेम का वास्तविक अर्थ जिम्मेदार नागरिक बनकर देश और समाज के विकास में योगदान देना है।

त्वरित सुझाव: निबंध में प्रत्येक अनुच्छेद को एक मुख्य विचार दें और अंतिम अनुच्छेद को शीर्षक के केंद्रीय भाव से जोड़ें।

3(ख). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : महाशक्ति के रूप में उभरता भारत [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में विषय का स्पष्ट परिचय, क्रमबद्ध विवेचन और सार्थक उपसंहार आवश्यक हैं।
- विकास की उपलब्धियों और चुनौतियों का संतुलित विवेचन विषय के प्रमुख पक्ष हैं। भाषा सरल, विचार मौलिक और अनुच्छेद परस्पर संबद्ध होने चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति पहले विषय का अर्थ स्पष्ट करें। इसके बाद मुख्य विचारों को अलग-अलग अनुच्छेदों में विकसित करें और अंत में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत करें। शीर्षक के नीचे सीधे निबंध लिखें; पत्र की तरह पता, संबोधन या हस्ताक्षर न दें।

चरण 2: विचारों का क्रम राष्ट्रीय शक्ति का व्यापक अर्थ बताकर आर्थिक, वैज्ञानिक और मानवीय क्षमताओं पर विचार करें। उपलब्धियों के साथ गरीबी, असमानता और पर्यावरण की चुनौतियाँ भी रखें। निष्कर्ष में समावेशी विकास और विश्वशांति से विषय को जोड़ें।

चरण 3: पूर्ण आदर्श निबंध महाशक्ति के रूप में उभरता भारत

किसी राष्ट्र की शक्ति का माप केवल उसकी सेना या अर्थव्यवस्था नहीं होती। उसके नागरिकों का स्वास्थ्य, शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि और जीवन की गरिमा भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण हैं। भारत की विशाल जनसंख्या, लोकतांत्रिक परंपरा और ज्ञान-संपदा उसे विश्व में प्रभावशाली भूमिका निभाने की संभावनाएँ देती हैं। इन संभावनाओं को समावेशी प्रगति में बदलना ही महाशक्ति बनने की वास्तविक राह है।

स्वतंत्रता के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में अपनी क्षमताएँ विकसित की हैं। कृषि ने खाद्यान्न की आवश्यकताओं को पूरा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उद्योग, सेवा क्षेत्र और सूचना-प्रौद्योगिकी ने आर्थिक विकास के नए अवसर बनाए हैं। अंतरिक्ष अनुसंधान, चिकित्सा और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय प्रतिभा ने अपनी पहचान स्थापित की है। ये उपलब्धियाँ आत्मविश्वास बढ़ाती हैं और आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं।

भारत की युवा आबादी उसकी बड़ी शक्ति बन सकती है। इसके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल, रोजगार और शोध के अवसर आवश्यक हैं। शिक्षित और स्वस्थ युवा केवल उपभोक्ता नहीं, नए विचारों और उद्यमों के निर्माता भी बनेंगे। महिलाओं की समान भागीदारी और ग्रामीण क्षेत्रों तक सुविधाओं का विस्तार विकास की नींव को अधिक मजबूत करेगा।

फिर भी मार्ग में अनेक चुनौतियाँ हैं। गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता और पर्यावरण का संकट प्रगति को सीमित करते हैं। यदि समृद्धि कुछ लोगों तक सिमट जाए, तो राष्ट्र की शक्ति अधूरी रहेगी। पारदर्शी प्रशासन, उत्तरदायी नागरिकता और संसाधनों का न्यायपूर्ण उपयोग इन बाधाओं को दूर करने के लिए जरूरी हैं।

विश्व में भारत की भूमिका शांति, सहयोग और मानवीय मूल्यों से जुड़ी होनी चाहिए। पड़ोसी देशों से संवाद, वैश्विक समस्याओं के समाधान में सहभागिता और अपनी सुरक्षा की तैयारी साथ-साथ चल सकते हैं। वास्तविक प्रतिष्ठा भय से नहीं, विश्वसनीयता से मिलती है।

इस प्रकार भारत का महाशक्ति बनना केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं, निरंतर सुधार का संकल्प है। जब विज्ञान और संवेदना, आर्थिक प्रगति और सामाजिक न्याय साथ बढ़ेंगे, तभी शक्तिशाली भारत का स्वप्न सार्थक होगा।

चरण 4: निष्कर्ष आर्थिक और वैज्ञानिक प्रगति के साथ शिक्षा, समानता तथा शांति के प्रति प्रतिबद्धता भारत को सच्चे अर्थ में शक्तिशाली बनाएगी।

त्वरित सुझाव: निबंध में प्रत्येक अनुच्छेद को एक मुख्य विचार दें और अंतिम अनुच्छेद को शीर्षक के केंद्रीय भाव से जोड़ें।

3(ग). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : मेरा प्रिय कवि [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में प्रस्तावना, विषय-विस्तार और उपसंहार की सुसंगत रचना आवश्यक है। विचारों का क्रम स्पष्ट हो और प्रत्येक अनुच्छेद विषय के किसी एक पक्ष को विकसित करे।
- इस निबंध का केंद्र कबीर है। विषय के अनुकूल उदाहरण, स्पष्ट तर्क और संतुलित भाषा लेखन को प्रभावी बनाते हैं। केवल सामान्य प्रशंसा के बजाय उसके कारण भी बताए जाने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा पहले प्रिय कवि का नाम और उसके प्रति आकर्षण का कारण लिखें। फिर कबीर की भक्ति-दृष्टि, सामाजिक समता, रूढ़ियों के विरोध और सरल भाषा पर अलग-अलग अनुच्छेद बनाएँ। अंत में अपने जीवन पर उनके विचारों का प्रभाव बताएँ। अप्रमाणित घटनाओं और मनगढ़ंत उद्धरणों से बचें।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श निबंध **मेरा प्रिय कवि**

कविता मनुष्य को आनंद देने के साथ जीवन को समझने की दृष्टि भी प्रदान करती है। हिंदी के अनेक कवियों में कबीर मेरे प्रिय कवि हैं। उनकी सहज वाणी में जीवन की गहरी समझ और अन्याय के विरुद्ध निर्भीक स्वर मिलता है। वे मुझे इसलिए प्रिय हैं कि उनकी कविता मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनने की प्रेरणा देती है।

कबीर भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा के प्रमुख कवि हैं। उनके लिए ईश्वर किसी बाहरी प्रदर्शन में सीमित नहीं है। वे सच्चे प्रेम, निर्मल हृदय और अच्छे आचरण को अधिक महत्त्व देते हैं। उन्होंने धार्मिक आडंबरों और रूढ़ियों पर प्रश्न उठाए। उनकी दृष्टि में केवल किसी धर्म का नाम धारण कर लेने से व्यक्ति श्रेष्ठ नहीं बनता; श्रेष्ठता उसके व्यवहार और संवेदना से प्रकट होती है।

कबीर की सामाजिक दृष्टि भी मुझे प्रभावित करती है। उन्होंने जाति और ऊँच-नीच के आधार पर मनुष्यों में भेद करने का विरोध किया। वे हमें दूसरों को तुच्छ समझने के बजाय अपने भीतर की कमियों को पहचानने की सीख देते हैं। यह आत्मपरीक्षण आज भी आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा और तकनीक की प्रगति के बाद भी समाज अनेक प्रकार के भेदभाव से मुक्त नहीं हुआ है।

उनकी भाषा में बोलचाल की सहजता और अभिव्यक्ति की तीव्रता है। वे दैनिक जीवन के परिचित अनुभवों से बड़ी बात कह देते हैं। उनकी छोटी-सी साखी भी पाठक को देर तक सोचने के लिए बाध्य करती है। भाषा का यह सादापन उनकी कविता की शक्ति है, क्योंकि उसके माध्यम से गंभीर विचार सामान्य जन तक पहुँचते हैं।

कबीर को पढ़कर मुझे सत्य बोलने, विनम्र रहने और सभी मनुष्यों का सम्मान करने की प्रेरणा मिलती है। उनकी वाणी हमें दिखावे से बचाकर जीवन के सार की ओर ले जाती है। मेरे लिए प्रिय कवि वही है जिसकी कविता पुस्तक बंद होने के बाद भी मन में जीवित रहे। कबीर की कविता इसी अर्थ में मेरी स्थायी साथी है।

चरण 3: निष्कर्ष कबीर के मानवीय संदेश, निर्भीक विचार और सहज भाषा के आधार पर उन्हें प्रिय कवि बताते हुए निबंध पूरा होता है।

त्वरित सुझाव: प्रिय कवि के जीवन-परिचय को संक्षिप्त रखें और उसे पसंद करने के तीन स्पष्ट कारण विकसित करें।

3(घ). निम्नांकित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए : अबला नहीं, सबला है नारी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में प्रस्तावना, विषय-विस्तार और उपसंहार की सुसंगत रचना आवश्यक है। विचारों का क्रम स्पष्ट हो और प्रत्येक अनुच्छेद विषय के किसी एक पक्ष को विकसित करे।
- इस निबंध का केंद्र नारी-सशक्तीकरण है। विषय के अनुकूल उदाहरण, स्पष्ट तर्क और संतुलित भाषा लेखन को प्रभावी बनाते हैं। केवल सामान्य प्रशंसा के बजाय उसके कारण भी बताए जाने चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा प्रस्तावना में नारी की क्षमता और समान अधिकारों की स्थापना करें। फिर ऐतिहासिक तथा वर्तमान उदाहरण, घरेलू श्रम का महत्त्व और सामाजिक बाधाओं की चर्चा करें। शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और समान अवसर के उपाय

बताएँ। अंत में स्त्री-पुरुष के सहयोग और गरिमा के सम्मान पर बल दें।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श निबंध **अबला नहीं, सबला है नारी**

नारी समाज की समान अधिकारों वाली सदस्य है। उसे कमजोर और असहाय मानने की धारणा उसकी क्षमताओं के साथ अन्याय है। परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में उसका योगदान पुरुष के योगदान जितना ही महत्त्वपूर्ण है। उसकी सहनशीलता, विवेक, परिश्रम और साहस यह सिद्ध करते हैं कि वह अबला नहीं, सबला है।

इतिहास और वर्तमान दोनों में स्त्रियों ने अपनी शक्ति का परिचय दिया है। रानी लक्ष्मीबाई का साहस और सावित्रीबाई फुले का स्त्री-शिक्षा के लिए संघर्ष प्रेरक उदाहरण हैं। आज महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, प्रशासन, खेल और रक्षा जैसे विविध क्षेत्रों में अपनी योग्यता प्रमाणित कर रही हैं। उनका कार्य बताता है कि अवसर मिलने पर कोई भी क्षेत्र उनकी पहुँच से बाहर नहीं है।

नारी की शक्ति केवल सार्वजनिक उपलब्धियों में ही नहीं दिखाई देती। घर के भीतर किया जाने वाला उसका श्रम भी परिवार और अर्थव्यवस्था का आधार है। बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की सहायता और परिवार की अनेक जिम्मेदारियाँ निभाने में धैर्य तथा निर्णय-क्षमता चाहिए। इस श्रम को स्वाभाविक कर्तव्य मानकर उपेक्षित करना अनुचित है। घरेलू जिम्मेदारियों का न्यायपूर्ण बँटवारा होना चाहिए, ताकि महिलाएँ अपनी रुचियों और आकांक्षाओं को भी पूरा कर सकें।

फिर भी अनेक स्त्रियाँ भेदभाव, अशिक्षा, हिंसा और अवसरों की कमी से जूझ रही हैं। इन बाधाओं का कारण उनकी दुर्बलता नहीं, बल्कि असमान सामाजिक परिस्थितियाँ हैं। शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, सुरक्षा और निर्णयों में भागीदारी उन्हें अपनी क्षमता विकसित करने में सहायता देती है। बेटियों को बेटों के समान पोषण, शिक्षा और प्रोत्साहन मिलना चाहिए। कार्यस्थलों पर सम्मान तथा समान अवसर भी आवश्यक हैं।

नारी को सबला मानने का अर्थ उस पर हर कठिनाई अकेले सहने का भार डालना नहीं है। इसका अर्थ उसके अधिकार, स्वतंत्रता और मानवीय गरिमा को स्वीकार करना है। स्त्री और पुरुष के सहयोग से ही न्यायपूर्ण समाज बन सकता है। जब महिलाओं को अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का अवसर मिलेगा, तब परिवार और राष्ट्र दोनों अधिक समृद्ध होंगे। नारी की शक्ति का सम्मान शब्दों से आगे बढ़कर हमारे व्यवहार में दिखाई देना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष नारी की क्षमता का सम्मान शिक्षा, समान अवसर, आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णयों में भागीदारी से प्रकट होता है। इन्हीं आधारों पर प्रस्तुत निबंध विषय की पुष्टि करता है।

त्वरित सुझाव: नारी की शक्ति के उदाहरणों के साथ सामाजिक बाधाओं और उन्हें दूर करने के ठोस उपाय भी लिखें।

4. समाजविरोधी गतिविधियों में संलिप्त पड़ोसी की सूचना एक जागरूक नागरिक होने के नाते पुलिस के उच्चाधिकारी को पत्र द्वारा दीजिए। उन प्रमाणों का भी उल्लेख कीजिए जिनके आधार पर आप ऐसा मानते हैं। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुलिस के उच्चाधिकारी को लिखा गया शिकायत-पत्र औपचारिक होता है। इसमें प्रेषक और प्राप्तकर्ता का पता, दिनांक, विषय, संबोधन तथा हस्ताक्षर आवश्यक हैं।
- जागरूक नागरिक को देखे गए तथ्यों और जाँच के अनुरोध को स्पष्ट करना चाहिए। संदेह को प्रमाणित अपराध बताने के बजाय उपलब्ध साक्ष्य देकर निष्पक्ष कार्रवाई माँगना उचित है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना पत्र पुलिस उपायुक्त को संबोधित होगा। पहले मोहल्ले और संदिग्ध गतिविधियों का परिचय दिया जाएगा, फिर प्रत्यक्ष अवलोकन तथा उपलब्ध प्रमाण बताए जाएँगे। अंत में गोपनीयता बनाए रखते हुए जाँच और सुरक्षा का अनुरोध किया जाएगा। भाषा शिष्ट, तथ्यपरक और संक्षिप्त रहेगी।

चरण 2: पूरा नमूना पत्र 24, शांति विहार
नई दिल्ली
दिनांक : 15 जुलाई, 2017
सेवा में,

पुलिस उपायुक्त
दक्षिण जिला, नई दिल्ली
विषय : पड़ोस में संदिग्ध समाजविरोधी गतिविधियों की जाँच हेतु अनुरोध।
महोदय,
मैं शांति विहार का निवासी हूँ। हमारे पड़ोस के मकान संख्या 26 में पिछले कुछ दिनों से होने वाली गतिविधियों ने मोहल्लेवासियों की चिंता बढ़ा दी है। वहाँ देर रात अपरिचित लोगों का आना-जाना होता है। कुछ व्यक्तियों को नशीले पदार्थ जैसे दिखने वाले छोटे पैकेट लेते और बदले में पैसे देते देखा गया है। आपत्ति करने पर दो निवासियों को धमकाया भी गया है।

10 और 12 जुलाई की रात की घटनाएँ सामने की दुकान के सीसीटीवी में दर्ज हैं। दुकानदार आवश्यकता पड़ने पर रिकॉर्डिंग उपलब्ध कराने को तैयार है। मैंने आने वाले वाहनों के नंबर और समय भी लिख रखे हैं। धमकी पाने वाले निवासी पुलिस के सामने अपना बयान दे सकते हैं। ये तथ्य संदेह उत्पन्न करते हैं; वास्तविक स्थिति की पुष्टि पुलिस की जाँच से ही हो सकेगी।

कृपया मामले की गोपनीय जाँच कराकर उचित कार्रवाई करें तथा रात की गश्त बढ़ाएँ। मेरी पहचान गोपनीय रखी जाए, ताकि मुझे या मेरे परिवार को कोई खतरा न हो। जाँच में मैं पूरा सहयोग दूँगा।
भवदीय
अमित कुमार
संपर्क : 98XXXXXXXX

चरण 3: निष्कर्ष इस पत्र में संदिग्ध गतिविधियों की सूचना, जाँच योग्य प्रमाण और उचित कार्रवाई का अनुरोध औपचारिक ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं।

त्वरित सुझाव: शिकायत-पत्र में घटना की तारीख, स्थान और उपलब्ध प्रमाण लिखें; संदेह को अंतिम निर्णय की तरह प्रस्तुत न करें।

अथवा

4. सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली जन धन की हानि से बचाव के लिए सुझाव देते हुए परिवहन अधिकारी को पत्र लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सुझाव-पत्र में समस्या के साथ उसके व्यावहारिक समाधान दिए जाते हैं। परिवहन अधिकारी को लिखते समय सड़क-सुरक्षा, वाहन-नियंत्रण और नियमों के पालन पर ध्यान देना चाहिए।
- औपचारिक पत्र के अंग हैं : प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मुख्य विषयवस्तु तथा समापन।

चरण 1: प्रारूप और सुझावों की योजना पत्र में दुर्घटनाओं से जन-धन की हानि का उल्लेख करके गति-नियंत्रण, वाहनों की जाँच, चालक-प्रशिक्षण और यातायात नियमों के पालन के सुझाव दिए जाएँगे। पैदल यात्रियों की सुरक्षा तथा संबंधित विभागों के समन्वय का आग्रह भी किया जाएगा। सुझाव स्पष्ट और लागू किए जा सकने योग्य होने चाहिए।

चरण 2: पूरा नमूना पत्र 18, विकास नगर
जयपुर
दिनांक : 15 जुलाई, 2017
सेवा में,
क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी
परिवहन विभाग, जयपुर
विषय : सड़क दुर्घटनाओं से जन-धन की हानि रोकने हेतु सुझाव।
महोदय,
हमारे शहर में सड़क दुर्घटनाएँ चिंता का विषय बन गई हैं। तेज गति, लापरवाही, यातायात नियमों की अनदेखी और खराब वाहनों के कारण अनेक परिवारों को अपूरणीय क्षति पहुँचती है। इस समस्या के समाधान के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत हैं।

भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों और विद्यालयों के पास गति-सीमा का कड़ाई से पालन कराया जाए। नशे में वाहन चलाने, मोबाइल पर बात करने तथा लाल बत्ती तोड़ने वालों पर कार्रवाई हो। हेलमेट और सीट-बेल्ट का प्रयोग सुनिश्चित किया जाए। व्यावसायिक वाहनों की नियमित तकनीकी जाँच हो तथा क्षमता से अधिक सवारी या सामान ढोने पर रोक लगाई जाए।

चालक-लाइसेंस देने से पहले वाहन चलाने की क्षमता और यातायात नियमों के ज्ञान की वास्तविक परीक्षा ली जाए। चालकों के लिए सड़क-सुरक्षा प्रशिक्षण भी आयोजित हों। संबंधित विभागों के सहयोग से गड्ढों की मरम्मत, स्पष्ट संकेतक, पर्याप्त रोशनी और सुरक्षित पैदल पार-पथ की व्यवस्था कराई जाए। दुर्घटना संभावित स्थानों की पहचान कर विशेष सुधार किए जाएँ।

कृपया इन सुझावों पर विचार करके प्रभावी कदम उठाएँ। नियमित निगरानी और जन-जागरूकता से सड़कें अधिक सुरक्षित बन सकती हैं।

भवदीय

अनुज शर्मा

चरण 3: निष्कर्ष पत्र में सड़क दुर्घटनाओं के प्रमुख कारणों को ध्यान में रखकर परिवहन अधिकारी से व्यावहारिक सुरक्षा उपाय लागू करने का अनुरोध किया गया है।

त्वरित सुझाव: सुझाव-पत्र में केवल समस्या न गिनाएँ; हर प्रमुख कारण के सामने लागू किया जा सकने वाला उपाय भी लिखें।

5(क). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : सम्पादकीय किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय समाचार-पत्र की विचारात्मक सामग्री है। इसमें किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र का अपना दृष्टिकोण व्यक्त होता है।
- समाचार तथ्य प्रस्तुत करता है, जबकि संपादकीय उन्हीं तथ्यों का विवेचन करके राय और दिशा देता है।

चरण 1: परिभाषा के मुख्य तत्व पहचानें उत्तर में समसामयिक विषय, विश्लेषण और समाचार-पत्र के दृष्टिकोण का उल्लेख आवश्यक है। किसी लेखक की निजी राय वाला प्रत्येक लेख संपादकीय नहीं होता।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर लिखें समाचार-पत्र में किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक घटना, समस्या या मुद्दे पर उसके दृष्टिकोण को व्यक्त करने वाला विचारात्मक लेख संपादकीय कहलाता है। यह प्रायः संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होता है।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय वह विचारात्मक लेख है जिसमें किसी समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र की नीति या राय व्यक्त की जाती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में विषय के साथ समाचार-पत्र का दृष्टिकोण अवश्य लिखें; केवल समाचार का विवरण कहना पर्याप्त नहीं है।

5(ख). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'एंकर बाइट' क्या है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- टेलीविजन समाचार में एंकर दर्शकों के सामने समाचार प्रस्तुत करता है। बाइट किसी संबंधित व्यक्ति का रिकॉर्ड किया हुआ संक्षिप्त कथन होता है।
- एंकर बाइट में एंकर की प्रस्तुति के साथ समाचार से जुड़े व्यक्ति का कथन सुनाया-दिखाया जाता है। इससे समाचार की पुष्टि और प्रामाणिकता बढ़ती है।

चरण 1: प्रस्तुति की बनावट समझें इस शैली में एंकर पहले समाचार की जानकारी देता है। इसके बाद घटना से जुड़े व्यक्ति, प्रत्यक्षदर्शी या संबंधित अधिकारी की रिकॉर्ड की गई प्रतिक्रिया प्रसारित होती है।

चरण 2: संक्षिप्त उत्तर लिखें जब टेलीविजन पर एंकर समाचार बताता है और उसके साथ उस समाचार से संबंधित किसी व्यक्ति का संक्षिप्त रिकॉर्ड किया गया कथन या प्रतिक्रिया दिखाई-सुनाई जाती है, तो उस समाचार-प्रस्तुति को एंकर बाइट कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष एंकर द्वारा समाचार की प्रस्तुति के साथ संबंधित व्यक्ति का संक्षिप्त रिकॉर्ड किया गया कथन प्रसारित करना एंकर बाइट है।

त्वरित सुझाव: एंकर बाइट में दो बातें याद रखें : एंकर की समाचार-प्रस्तुति और संबंधित व्यक्ति की रिकॉर्ड की गई प्रतिक्रिया।

5(ग). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : अंशकालिक पत्रकार से क्या आशय है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनकी नियुक्ति और समाचार-संस्था से संबंध के आधार पर किया जाता है।
- अंशकालिक पत्रकार किसी संस्था का नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी नहीं होता।

चरण 1: नियुक्ति की प्रकृति पहचानें अंशकालिक पत्रकार का समाचार-संस्था के साथ संबंध सीमित कार्य या समय के लिए होता है। वह नियमित वेतनभोगी कर्मचारी की तरह पूर्ण समय उस संस्था को नहीं देता।

चरण 2: कार्य और पारिश्रमिक समझें वह प्रायः किसी स्थान या क्षेत्र से समाचार और सूचनाएँ भेजता है। उसे उसके योगदान या प्रकाशित सामग्री के आधार पर पारिश्रमिक मिलता है। ऐसे पत्रकार को स्ट्रिंगर भी कहते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अंशकालिक पत्रकार वह पत्रकार है जो किसी समाचार-संस्था के लिए नियमित पूर्णकालिक कर्मचारी के रूप में काम न करके आंशिक रूप से समाचार भेजता है और अपने योगदान के अनुसार पारिश्रमिक पाता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में सीमित समय या योगदान, नियमित कर्मचारी न होना और योगदान के अनुसार पारिश्रमिक अवश्य जोड़ें।

5(घ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : संदेह करना पत्रकार के स्वभाव में क्यों आवश्यक है? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता में सूचना की सत्यता और विश्वसनीयता की जाँच आवश्यक है।
- पत्रकार का संदेह विवेकपूर्ण जिज्ञासा है, निराधार आरोप लगाना नहीं।

चरण 1: प्राप्त सूचना की सीमा समझें पत्रकार को मिलने वाली सूचना अधूरी, एकपक्षीय या स्वार्थ से प्रेरित हो सकती है। यदि वह उसे बिना जाँचे स्वीकार कर ले, तो गलत समाचार पाठकों तक पहुँच सकता है।

चरण 2: संदेह की उपयोगिता बताएं संदेह पत्रकार को प्रश्न पूछने, प्रमाण खोजने और दूसरे स्रोत से पुष्टि करने के लिए प्रेरित करता है। इससे वह दिखने वाली बात के पीछे छिपे तथ्य तक पहुँचकर अधिक विश्वसनीय समाचार प्रस्तुत कर सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष संदेह करना इसलिए आवश्यक है कि पत्रकार किसी सूचना को आँख मूँदकर स्वीकार न करे, बल्कि उसकी जाँच-पड़ताल करके सत्य तक पहुँचे और जनता को सही समाचार दे।

त्वरित सुझाव: उत्तर को सूचना पर प्रश्न उठाने, उसकी पुष्टि करने और सत्य सामने लाने की क्रमबद्ध प्रक्रिया से जोड़ें।

5(ङ). निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 'डेस्क' किसे कहते हैं? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-संस्था में समाचार संकलन और संपादन अलग कार्य हैं।
- डेस्क संपादकीय विभाग का वह भाग है जहाँ प्राप्त समाचारों को प्रकाशन योग्य बनाया जाता है।

चरण 1: डेस्क का अर्थ स्पष्ट करें पत्रकारिता में डेस्क से आशय केवल काम करने की मेज से नहीं है। यह समाचार-पत्र या समाचार-संस्था का संपादन विभाग अथवा उसका कार्य-समूह है।

चरण 2: मुख्य कार्य पहचानें यहाँ संवाददाताओं और अन्य स्रोतों से मिले समाचारों का चयन, जाँच, संपादन और शीर्षक-निर्धारण होता है। भाषा तथा प्रस्तुति सुधारकर समाचार को प्रकाशन या प्रसारण के योग्य बनाया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष डेस्क समाचार-संस्था का वह संपादकीय विभाग है जहाँ प्राप्त समाचारों का चयन, संपादन और शीर्षक-निर्धारण करके उन्हें प्रकाशन या प्रसारण के लिए तैयार किया जाता है।

त्वरित सुझाव: डेस्क की परिभाषा में विभाग और उसके काम दोनों लिखें; केवल मेज अथवा समाचार एकत्र करने का स्थान न लिखें।

6. 'राष्ट्रीय सुरक्षा' पर एक फीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर किसी विषय को मानवीय प्रसंग, रोचक भाषा और तथ्यपरक विवेचन के साथ प्रस्तुत करता है।
- राष्ट्रीय सुरक्षा में सीमाओं की रक्षा के साथ आंतरिक शांति, सामाजिक एकता और नागरिक सजगता भी महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री की योजना आकर्षक शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दिया जाएगा। आरंभ में सीमा पर तैनात सैनिक का मानवीय चित्र होगा। मुख्य भाग में सुरक्षा के विभिन्न आयाम और नागरिकों की भूमिका आएगी। अंत में साझा दायित्व का संदेश दिया जाएगा। बिना स्रोत के आँकड़े या किसी वास्तविक व्यक्ति का मनगढ़ंत कथन नहीं जोड़ा जाएगा।

चरण 2: पूर्ण फीचर राष्ट्रीय सुरक्षा : चौकसी की अनगिनत आँखें

लेखक : अभिषेक

बर्फ से ढकी चौकी पर एक सैनिक रात भर जागता है। उसके सामने फैला अँधेरा केवल कठिन मौसम की चुनौती नहीं, करोड़ों लोगों की निश्चिंत नींद की जिम्मेदारी भी है। उसकी सतर्क आँखें याद दिलाती हैं कि देश की सुरक्षा कितने त्याग से संभव होती है।

राष्ट्रीय सुरक्षा का पहला चित्र हमारी सीमाओं की रक्षा है। सेना की तैयारी, कठिन परिस्थितियों में प्रशिक्षण और आधुनिक साधन इस रक्षा को मजबूत बनाते हैं। लेकिन सुरक्षा की कहानी सीमा पर समाप्त नहीं होती। गाँव की शांति, शहर का आपसी विश्वास और सार्वजनिक स्थानों की व्यवस्था भी इसी कहानी के अध्याय हैं।

आतंकवाद, सांप्रदायिक तनाव और अफवाहें भीतर से समाज को कमजोर करती हैं। जब कोई अपुष्ट संदेश तेजी से फैलता है, तब नागरिक की छोटी-सी सावधानी बड़ा बचाव बन सकती है। संदेश की सत्यता जाँचना, भड़काऊ सामग्री आगे न भेजना और किसी संदिग्ध गतिविधि की सूचना जिम्मेदार अधिकारी को देना सजग नागरिकता के उदाहरण हैं। संदेह के नाम पर किसी निर्दोष व्यक्ति को परेशान करना सुरक्षा नहीं, अव्यवस्था बढ़ाना है।

डिजिटल संसार में भी चौकसी जरूरी है। निजी जानकारी और पासवर्ड की रक्षा तथा अनजान लिंक से सावधानी हमारी आर्थिक और व्यक्तिगत सुरक्षा मजबूत करती है। ऊर्जा, संचार और अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं का सुरक्षित रहना पूरे देश के लिए महत्त्व रखता है।

शहीदों के प्रति सम्मान केवल समारोहों तक सीमित न रहे। सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, कानून का पालन और विविध समुदायों के प्रति सम्मान भी देश को मजबूत करते हैं। सीमाओं पर सैनिक पहरा देते हैं; भीतर एक जिम्मेदार और एकजुट समाज उनका संबल बनता है। राष्ट्रीय सुरक्षा तभी सुदृढ़ होती है जब हर नागरिक अपने हिस्से की चौकसी निभाता है।

चरण 3: निष्कर्ष यह फीचर सैनिक के मानवीय चित्र से आरंभ होकर सीमाओं की रक्षा, आंतरिक शांति, डिजिटल सावधानी और नागरिक

जिम्मेदारी को जोड़ता है। एकता तथा सजगता इसका केंद्रीय संदेश हैं।

त्वरित सुझाव: फीचर में रोचक आरंभ, मानवीय दृष्टि और विषय का विस्तार रखें; केवल नारे या बिंदुवार उपाय लिखकर उसे समाप्त न करें।

अथवा

6. 'महानगरीय जीवनशैली' पर एक फीचर लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फीचर किसी विषय के मानवीय पक्ष को रोचक दृश्य, अनुभव और संवेदनशील भाषा से सामने लाता है। इसमें आकर्षक शीर्षक, जीवंत आरंभ, विषय का विस्तार और प्रभावपूर्ण समापन होता है।
- महानगरीय जीवनशैली पर लिखते हुए अवसरों, सुविधाओं, भागदौड़, अकेलेपन और संबंधों के बीच संतुलन का चित्र प्रस्तुत करना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय की रूपरेखा पहले ऐसा शीर्षक चुनें जो महानगर की चमक और उसकी व्यस्तता दोनों का संकेत दे। आरंभ किसी परिचित दृश्य से करें, जैसे सुबह की भीड़ या मेट्रो का सफर। मुख्य भाग में रोजगार, शिक्षा और विविधता के साथ यातायात, प्रदूषण तथा मानवीय दूरी का अनुभव जोड़ें। अंत जीवन को अधिक सहज और आत्मीय बनाने के विचार से करें। काल्पनिक आँकड़े देने के बजाय सामान्य अनुभवों और सजीव वर्णन का सहारा लें।

चरण 2: संपूर्ण नमूना फीचर **रोशनी के बीच अपनेपन की तलाश**

लेखक: एक विद्यार्थी

सुबह के सात बजे हैं। मेट्रो का दरवाजा खुलते ही कदमों का सैलाब बाहर उमड़ पड़ता है। किसी के हाथ में टिफिन है, किसी के कान में ईयरफोन और किसी की निगाह घड़ी पर टिकी है। महानगर की सुबह सचमुच दौड़ते हुए शुरू होती है।

यहाँ सपनों को पंख मिलते हैं। बड़े शिक्षण संस्थान, अस्पताल, रोजगार के अवसर और आधुनिक साधन लोगों को दूर-दूर से खींच लाते हैं। एक ही मोहल्ले में अलग-अलग भाषाएँ सुनाई देती हैं और अनेक प्रदेशों के व्यंजनों की खुशबू मिलती है। यह विविधता महानगर की सुंदर पहचान है।

लेकिन चमकती इमारतों के नीचे जिंदगी की मुश्किलें भी हैं। लंबा सफर, महँगा किराया और काम का दबाव दिन का बड़ा हिस्सा ले लेते हैं। सड़कों का शोर और धुआँ थकान बढ़ाते हैं। घर लौटते समय भी मोबाइल की घंटी कार्यालय को साथ ले आती है। पास-पास बने फ्लैटों में रहने वाले लोग कभी-कभी एक-दूसरे का नाम तक नहीं जानते। भीड़ में घिरा मन भी अकेला हो सकता है।

फिर भी अपनापन असंभव नहीं है। पड़ोसी की मदद, साथ बैठकर भोजन, बच्चों के साथ कुछ पल और पार्क में खुलकर बातचीत इस दौड़ को मानवीय बना सकते हैं। सार्वजनिक परिवहन अपनाना और हरियाली बचाना भी शहर के प्रति जिम्मेदारी है।

महानगर की पहचान केवल उसकी ऊँची इमारतें नहीं होनी चाहिए। उसकी सच्ची ऊँचाई तब दिखेगी, जब वहाँ रहने वाले मनुष्यों के बीच रिश्तों की गर्माहट भी बढ़ेगी।

चरण 3: निष्कर्ष यह फीचर महानगरीय जीवन के आकर्षण और चुनौतियों का जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है तथा संवेदनशील संबंधों और संतुलित दिनचर्या को बेहतर जीवन का आधार बनाता है।

त्वरित सुझाव: महानगरीय जीवन पर फीचर की शुरुआत भीड़ या मेट्रो के दृश्य से करें और समापन मानवीय संबंधों की आवश्यकता से जोड़ें।

7. 'नारी सुरक्षा' विषय पर आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख किसी सामाजिक विषय का तर्कपूर्ण और क्रमबद्ध विवेचन होता है। इसमें उपयुक्त शीर्षक, लेखक का नाम, विषय की भूमिका, कारणों का विश्लेषण, व्यावहारिक सुझाव और निष्कर्ष आते हैं।
- नारी सुरक्षा का संबंध केवल अपराध रोकने से नहीं, बल्कि महिलाओं की गरिमा, स्वतंत्रता, समान अवसर और भयमुक्त जीवन से भी है।

चरण 1: प्रारूप और विषयवस्तु की योजना शीर्षक के नीचे लेखक का नाम दें। भूमिका में नारी सुरक्षा का महत्त्व स्पष्ट करें। मुख्य भाग में असमान सोच, हिंसा के प्रति चुप्पी और असुरक्षित सार्वजनिक स्थान जैसी समस्याओं का उल्लेख करें। फिर परिवार, विद्यालय, प्रशासन और नागरिकों की जिम्मेदारियाँ बताएं। समापन ऐसा हो जो महिलाओं की स्वतंत्रता का समर्थन करे और सुरक्षा की जिम्मेदारी पूरे समाज पर रखे। बिना प्रमाण के आँकड़े या किसी घटना का विवरण न जोड़ें।

चरण 2: संपूर्ण नमूना आलेख **नारी सुरक्षा: सम्मान और स्वतंत्रता का आधार**

लेखक: एक विद्यार्थी

किसी समाज की प्रगति का मूल्यांकन इस बात से भी होता है कि वहाँ महिलाएँ कितनी निर्भय होकर जी सकती हैं। शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में उनकी बढ़ती भागीदारी तभी सार्थक होगी, जब घर, सड़क, कार्यस्थल और डिजिटल संसार में उनकी गरिमा सुरक्षित हो।

नारी की असुरक्षा के पीछे केवल कानून लागू करने की कमजोरी नहीं, बल्कि भेदभावपूर्ण मानसिकता भी है। लड़कों को अधिकार और लड़कियों को केवल मर्यादा का पाठ पढ़ाने से असमानता बढ़ती है। छेड़छाड़ को मजाक समझना, पीड़ित महिला को दोष देना और हिंसा को निजी मामला कहकर टालना अपराधियों का साहस बढ़ाता है।

परिवर्तन की शुरुआत परिवार और विद्यालय से होनी चाहिए। बच्चों को समानता, सहमति और दूसरों की सीमाओं का सम्मान सिखाना जरूरी है। बेटियों की आवाजाही रोकने के बजाय बेटों को जिम्मेदार व्यवहार सिखाया जाए। महिलाओं को शिकायत करने पर अपमान या अविश्वास का सामना न करना पड़े।

प्रशासन की भूमिका भी स्पष्ट है। सड़कों पर पर्याप्त रोशनी, सुरक्षित सार्वजनिक परिवहन, संवेदनशील पुलिस और शिकायतों पर समयबद्ध कार्रवाई आवश्यक हैं। कार्यस्थलों तथा शिक्षण संस्थानों में शिकायतों की निष्पक्ष सुनवाई हो। डिजिटल माध्यमों पर धमकी और उत्पीड़न को भी गंभीरता से लिया जाए। नागरिकों को ऐसी घटनाएँ देखकर चुप रहने के बजाय सुरक्षित ढंग से सहायता करनी चाहिए।

नारी सुरक्षा का अर्थ महिलाओं को घर की चारदीवारी में बंद करना नहीं है। वास्तविक सुरक्षा वह है जिसमें वे अपनी पसंद से पढ़ सकें, काम कर सकें और जीवन के निर्णय ले सकें। कानून, सामाजिक संवेदनशीलता और समानता की शिक्षा मिलकर ही ऐसा वातावरण बना सकते हैं। सम्मानपूर्ण समाज बनाना हम सबकी साझा जिम्मेदारी है।

चरण 3: निष्कर्ष नारी सुरक्षा के लिए प्रभावी प्रशासन, संवेदनशील व्यवहार और लैंगिक समानता आवश्यक हैं। महिलाओं की स्वतंत्रता तथा गरिमा सुरक्षित रखना पूरे समाज का दायित्व है।

त्वरित सुझाव: नारी सुरक्षा के आलेख में समस्या के साथ परिवार, विद्यालय, प्रशासन और नागरिकों के ठोस दायित्व लिखें; महिलाओं की स्वतंत्रता सीमित करने को समाधान न बनाएँ।

अथवा

7. 'बदलते जीवन मूल्य' विषय पर आलेख लिखिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का परिचय, उसके विभिन्न पक्षों का विवेचन और स्पष्ट निष्कर्ष दिया जाता है।

- जीवन-मूल्य वे आदर्श हैं जो व्यक्ति के व्यवहार तथा समाज के पारस्परिक संबंधों को दिशा देते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना शीर्षक और लेखक के नाम के बाद भूमिका, मूल विवेचन तथा उपसंहार लिखना उचित है। इस विषय में पारंपरिक मूल्यों, आधुनिक परिवर्तनों, उनके लाभ और समस्याओं तथा संतुलित दृष्टि को क्रम से रखा जाएगा। केवल आधुनिक जीवन की निंदा करने के स्थान पर सकारात्मक परिवर्तनों को भी समझना आवश्यक है।

चरण 2: संपूर्ण आदर्श आलेख **बदलते जीवन मूल्य**

लेखक : अजय कुमार

समय के साथ रहन-सहन ही नहीं, मनुष्य के सोचने और व्यवहार करने का ढंग भी बदलता है। सत्य, करुणा, ईमानदारी और सहयोग जैसे जीवन-मूल्य समाज को जोड़ते हैं। आज विज्ञान, तकनीक, शहरीकरण और बाजार के विस्तार ने इन मूल्यों की अभिव्यक्ति को नया रूप दिया है।

पहले संयुक्त परिवारों में सामूहिक निर्णय, बड़ों का आदर और पड़ोसियों से आत्मीयता जीवन के सहज अंग थे। आज छोटे परिवारों और व्यस्त दिनचर्या के कारण व्यक्ति की स्वतंत्रता बढ़ी है, किंतु पारिवारिक संवाद के अवसर घटे हैं। संबंध बनाए रखने के लिए समय और संवेदनशीलता की आवश्यकता है; केवल आर्थिक सुविधा पर्याप्त नहीं है।

उपभोक्तावाद ने सफलता का मानदंड धन और वस्तुओं के संग्रह को बना दिया है। विज्ञापन निरंतर नई इच्छाएँ पैदा करते हैं। कभी-कभी अधिक कमाने की दौड़ में ईमानदारी, संतोष और दूसरों के प्रति जिम्मेदारी पीछे छूट जाती है। सामाजिक माध्यमों पर दिखावा भी वास्तविक आत्मीयता की जगह लेने लगता है।

फिर भी प्रत्येक परिवर्तन को पतन कहना उचित नहीं होगा। स्त्री-पुरुष समानता, शिक्षा के प्रति जागरूकता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। अनेक युवा पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान और जरूरतमंदों की सहायता में सक्रिय हैं। ये गतिविधियाँ बताती हैं कि संवेदना समाप्त नहीं हुई, उसके नए रूप सामने आए हैं।

आवश्यकता ऐसी प्रगति की है जो मानवीयता से जुड़ी हो। परिवार में संवाद, विद्यालय में नैतिक व्यवहार और सार्वजनिक जीवन में उत्तरदायित्व को महत्व देना चाहिए। हम तकनीक का उपयोग संबंध मजबूत करने में करें तथा सफलता को सामाजिक योगदान से भी आँकें। बदलते समय में मूल्य जड़ नहीं रहने चाहिए, लेकिन परिवर्तन की कसौटी मनुष्य की गरिमा और सामूहिक कल्याण होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख का केंद्रीय संदेश है कि आधुनिकता के उपयोगी परिवर्तनों को स्वीकार करते हुए करुणा, ईमानदारी और सहयोग को जीवन में बनाए रखा जाए।

त्वरित सुझाव: आलेख में एक सकारात्मक परिवर्तन और एक चुनौती का ठोस उदाहरण देकर अंत में व्यावहारिक उपाय सुझाइए।

---

8. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ [8 अंक]

8(क). शीतल वाणी में आग कथन का विरोध समझाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विरोधाभास में परस्पर विरोधी दिखाई देने वाली बातों से गहरे भाव की अभिव्यक्ति होती है।
- काव्यांश में शीतलता वाणी के संयमित रूप का और आग अंतर्मन की तीव्र अनुभूति का संकेत है।

चरण 1: विरोध को पहचानना सामान्य अर्थ में शीतलता ठंडक और शांति का अनुभव कराती है, जबकि आग ताप तथा जलन की प्रतीक है। इसलिए वाणी को शीतल बताकर उसी में आग होने की बात कहना ऊपर से विरोधी लगता है। दोनों शब्द एक ही अनुभूति के अलग-अलग पक्षों को प्रकट करते हैं।

चरण 2: अंतर्निहित भाव समझना कवि की अभिव्यक्ति मधुर, शांत और संयमित है; उसके भीतर दुख, व्यथा और प्रखर भावनाओं की तपन है। वह इस आंतरिक दाह को कटु वाणी के रूप में नहीं, संवेदनशील कविता के रूप में व्यक्त करता है। इस प्रकार बाहर की शीतलता और भीतर की आग साथ रह सकती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि कवि की मधुर और शांत वाणी के भीतर गहरी वेदना तथा भावनाओं की तीव्र ज्वाला विद्यमान है। यही शीतलता और आग का दिखाई देने वाला विरोध है।

त्वरित सुझाव: विरोध समझाते समय शीतलता को वाणी के स्वर और आग को भीतर की तीव्र भावना से जोड़िए।

8(ख). कवि ने खंडहर का भाग किसे कहा है? क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीक किसी ठोस वस्तु के माध्यम से व्यापक भाव अथवा अनुभव को व्यक्त करता है।
- खंडहर और राजप्रासाद का अंतर बाहरी वैभव तथा आंतरिक भाव-संपदा के अंतर को उजागर करता है।

चरण 1: खंडहर का संकेत पहचानना कवि ने अपने टूटे हुए, दुख और अभाव से भरे जीवन तथा उसके हृदय की भग्न अवस्था को खंडहर का भाग कहा है। खंडहर कभी पूर्ण रहे भवन के टूटे अवशेष होते हैं; इसी प्रकार जीवन के आघातों ने कवि के मन को आहत किया है। यह कथन केवल किसी वास्तविक इमारत का वर्णन नहीं है।

चरण 2: उसके महत्व का कारण बताना इस दुखभरे जीवन में भी प्रेम, संवेदना और अनुभूतियों का अमूल्य धन सुरक्षित है। इसी कारण कवि कहता है कि उस पर राजाओं के प्रासाद भी निछावर हो सकते हैं। बाहरी दरिद्रता या टूटन उसकी आंतरिक संपन्नता को कम नहीं करती; उसका मानवीय अनुभव भौतिक वैभव से अधिक मूल्यवान है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का खंडहर उसका भग्न और वेदनामय जीवन है, जिसे उसने प्रेम तथा संवेदना की संपदा के कारण राजप्रासादों से भी अधिक मूल्यवान बताया है।

त्वरित सुझाव: किसे और क्यों, दोनों का उत्तर दीजिए: पहले भग्न जीवन की पहचान, फिर उसमें संचित भाव-संपदा का मूल्य।

8(ग). भाव स्पष्ट कीजिए – "मैं खंडहर का वह भाग लिए फिरता हूँ"। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भावार्थ में प्रतीकात्मक कथन को सरल भाषा में खोलकर उसका केंद्रीय भाव स्पष्ट किया जाता है।
- खंडहर जीवन की टूटन का और प्रासाद सांसारिक वैभव का प्रतीक है।

चरण 1: कथन का सरल अर्थ कवि अपने साथ जीवन की विफलताओं, दुखों और टूटे सपनों की स्मृतियाँ लेकर चलता है। खंडहर का भाग उसके उसी आहत जीवन का प्रतीक है। वह अपने अनुभवों से मुँह नहीं मोड़ता; जीवन की टूटन भी उसकी पहचान और उसकी कविता की संवेदना का हिस्सा है।

चरण 2: संदर्भ से भाव स्पष्ट करना इससे पहले की पंक्ति में कवि कहता है कि राजाओं के प्रासाद भी इस खंडहर पर न्योछावर किए जा सकते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि उसका दुखभरा जीवन केवल निरर्थक विनाश नहीं है। उसमें प्रेम और मानवीय अनुभूति का ऐसा मूल्य है जो धन, सत्ता और भवनों की चमक से बढ़कर है। कवि इसी भीतरी संपदा को अपने साथ रखता है।

चरण 3: निष्कर्ष भाव यह है कि कवि अपना दुख और टूटन स्वीकार करते हुए भी अपने जीवन की भावनात्मक समृद्धि पर विश्वास रखता है; उसका आहत हृदय भौतिक वैभव से अधिक मूल्यवान है।

त्वरित सुझाव: भावार्थ में केवल खंडहर का शब्दार्थ न लिखें; उसे कवि के जीवन और राजप्रासाद वाली पंक्ति से जोड़ें।

8(घ). रोदन में राग लेने से कवि का क्या आशय है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रोदन दुख और पीड़ा की अभिव्यक्ति है, जबकि राग संगीत तथा मधुर भावाभिव्यक्ति का सूचक है।
- कवि की विशेषता निजी वेदना को कलात्मक और संवेदनशील अभिव्यक्ति में बदलना है।

चरण 1: रोदन और राग का संबंध रोदन में राग लेने का अर्थ है कि कवि के दुख में भी गीत का स्वर उपस्थित है। उसके जीवन में पीड़ा है, किंतु वह उसे केवल शिकायत या असहाय विलाप बनाकर नहीं रखता। वह उसी अनुभूति को गीत और कविता के माध्यम से व्यक्त करता है, जिससे व्यक्तिगत दुख एक मधुर और प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति पाता है।

चरण 2: कवि की जीवन-दृष्टि कवि वेदना से भागता नहीं, उसे अपने सृजन का आधार बनाता है। इसलिए रोदन और राग यहाँ एक-दूसरे को नष्ट नहीं करते; पीड़ा के भीतर ही काव्य-संगीत जन्म लेता है। यह कथन दुख को साधारण सुख बताने का नहीं, दुख में भी संवेदना और सृजन की संभावना बनाए रखने का संकेत है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का आशय है कि वह निजी दुख और आँसुओं को गीत की मधुरता में ढालकर व्यक्त करता है; उसकी वेदना ही उसके काव्य-सृजन का आधार बन जाती है।

त्वरित सुझाव: रोदन को पीड़ा और राग को गीत से जोड़कर बताइए कि कवि दोनों को सृजन में किस प्रकार एक करता है।

अथवा

8. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष
अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल!
त्रस्त-नयन-मुख ढाँप रहे हैं।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार! [8 अंक]

8(क). "विप्लव के वीर कौन हैं? उन्हें क्यों बुलाया जा रहा है? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में बादल क्रांति, परिवर्तन और जीवनदायी शक्ति के प्रतीक हैं।
- संबोधन का अर्थ उसके साथ आए कृषक और शोषण के चित्र से स्पष्ट होता है।

चरण 1: विप्लव के वीर की पहचान कवि ने बादलों को विप्लव के वीर कहा है। उनकी वज्र जैसी गर्जना परिवर्तन की घोषणा करती है। बादल यहाँ केवल वर्षा करने वाली प्राकृतिक शक्ति नहीं, बल्कि अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलने वाली क्रांतिकारी शक्ति का प्रतीक हैं।

चरण 2: बुलाने का उद्देश्य शोषण ने कृषक का सार चूस लिया है और उसका शरीर हड्डियों का ढाँचा रह गया है। इसलिए वह बादलों

को पुकारता है कि वे वर्षा से उसकी खेती को जीवन दें तथा परिवर्तन से शोषण और अभाव का अंत करें। ऐ जीवन के पारावार में इसी जीवनदायी आशा की अभिव्यक्ति है। इसलिए संबोधन में वीरता के साथ करुणा भी निहित है; बादल शक्तिशाली होकर निर्बल किसान को जीवन देने की क्षमता रखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष विप्लव के वीर बादल हैं; शोषित कृषक उन्हें जीवन, राहत और शोषण से मुक्ति की आशा में बुला रहा है।

त्वरित सुझाव: पहचान बताते समय बादल का नाम और प्रतीकार्थ दोनों लिखें; फिर कृषक की पुकार का कारण जोड़ें।

8(ख). शोषकों की किन विशेषताओं का उल्लेख है? वे क्यों भयभीत हैं? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शोषक वर्ग की संपन्नता के पीछे कृषक के श्रम और जीवन का शोषण दिखाई देता है।
- बादल की गर्जना क्रांति का संकेत बनकर शोषकों के भय को उजागर करती है।

चरण 1: शोषकों की विशेषताएँ शोषक धनी हैं और उनका धन कोषों में बंद है। वे धन को अपने पास रोककर रखते हैं और सुख-विलास में डूबे हैं। अंगना-अंग से लिपटे भी उनके विलासी जीवन का संकेत है। इसके विपरीत कृषक का सार चूस लिया गया है; अतः उनकी समृद्धि के साथ उसका शोषण जुड़ा है।

चरण 2: भय का कारण बादलों की वज्र-गर्जना उन्हें क्रांति की चेतावनी लगती है। वे भयभीत होकर काँपते हैं और आँखें तथा मुख ढाँप लेते हैं। उन्हें आशंका है कि परिवर्तन होने पर उनकी संचित संपत्ति, सुख-सुविधाएँ और शोषण पर आधारित प्रभुत्व समाप्त हो जाएगा। इस प्रकार धन होने पर भी शोषक नैतिक साहस से रहित दिखाई देते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शोषक धनसंचयी, विलासी और शोषण से समृद्ध वर्ग हैं; वे क्रांति से अपने धन और प्रभुत्व के नष्ट होने की आशंका से भयभीत हैं।

त्वरित सुझाव: धनी की बाहरी संपन्नता के साथ उसकी भीतरी कायरता लिखें और भय को क्रांति के प्रतीक से जोड़ें।

8(ग). कृषक के रूपाकार का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कृषक का शारीरिक चित्र शोषण और निर्धनता की तीव्रता प्रकट करता है।
- जीर्ण बाहु, शीर्ण शरीर और हाड़-मात्र उसके रूपाकार के निर्णायक संकेत हैं।

चरण 1: शारीरिक दशा का चित्रण कृषक की भुजाएँ दुर्बल और जीर्ण हो गई हैं। उसका शरीर क्षीण, जर्जर और अत्यंत दुबला है। लगातार श्रम तथा अभाव ने उसकी शारीरिक शक्ति समाप्त कर दी है। उसकी देह में मांस लगभग नहीं बचा; वह हड्डियों का ढाँचा दिखाई देता है।

चरण 2: चित्र में निहित स्थिति चूस लिया है उसका सार बताता है कि शोषण ने उसके शरीर की जीवनीशक्ति छीन ली है। यह स्वस्थ और संपन्न किसान का चित्र नहीं, बल्कि अपनी मेहनत के फल से वंचित, असहाय कृषक का चित्र है। शरीर की टूटन के साथ उसकी अधीर पुकार उसके दुख और राहत की तीव्र आवश्यकता को भी व्यक्त करती है। इस चित्र में शरीर का क्षय ही उसके जीवन के संघर्ष का प्रमाण बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष कृषक की भुजाएँ कमजोर, देह क्षीण और जर्जर है; शोषण ने उसे जीवनीशक्ति से रहित हड्डियों का ढाँचा बना दिया है।

त्वरित सुझाव: रूपाकार के उत्तर में पहले शरीर के अंगों की दशा लिखें, फिर उन संकेतों से उभरती शोषित स्थिति समझाएँ।

8(घ). कृषक की अधीरता का कारण स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कृषक की अधीरता उसके शारीरिक क्षय और शोषण से मुक्ति की तीव्र आकांक्षा से जुड़ी है।
- बादल उसके लिए वर्षा, नवजीवन और क्रांतिकारी परिवर्तन की आशा हैं।

चरण 1: अधीरता की पृष्ठभूमि कृषक निरंतर शोषण और अभाव से पीड़ित है। उसका सार चूस लिया गया है, उसकी भुजाएँ जीर्ण हैं और शरीर में हड्डियाँ मात्र बची हैं। ऐसी दुर्दशा में वह और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता। उसकी अधीरता सामान्य उत्सुकता नहीं, जीवन बचाने की व्याकुलता है।

चरण 2: बादल से अपेक्षा वह बादलों को जीवन के पारावार तथा विप्लव के वीर के रूप में पुकारता है। उसे आशा है कि वर्षा से खेतों और उसके जीवन में नई शक्ति आएगी तथा क्रांति से शोषणपूर्ण व्यवस्था बदलेगी। इस राहत और मुक्ति की तीव्र प्रतीक्षा के कारण वह बादलों को अधीर होकर बुलाता है। उसकी पुकार में वर्तमान दुख और भविष्य की आशा दोनों एक साथ व्यक्त हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शोषण और अभाव से जर्जर कृषक वर्षा तथा क्रांतिकारी परिवर्तन द्वारा जीवन और मुक्ति पाने के लिए अधीर है।

त्वरित सुझाव: अधीरता को केवल वर्षा की प्रतीक्षा तक सीमित न रखें; शारीरिक दुर्दशा और शोषण से मुक्ति की आकांक्षा भी लिखें।

9(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : विप्लव के बादल का स्वागत कौन-सा वर्ग करता है और क्यों? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला के यहाँ बादल क्रांति और जीवन के नवीकरण के प्रतीक हैं।
- कविता में शोषित कृषक की आशा और धनी वर्ग का भय विपरीत सामाजिक प्रतिक्रियाएँ हैं।

चरण 1: स्वागत करने वाले वर्ग की पहचान विप्लव के बादल का स्वागत शोषित, निर्धन और श्रमजीवी वर्ग करता है। कविता में कृषक इस वर्ग का प्रतिनिधि है। तुझे बुलाता कृषक अधीर से स्पष्ट है कि किसान बादल के आने से डरता नहीं, बल्कि व्याकुल होकर उसका आह्वान करता है। वह परिवर्तन को अपने जीवन की आशा मानता है।

चरण 2: कृषक की दुर्दशा और परिवर्तन की आवश्यकता शोषण ने कृषक का सार चूस लिया है। उसकी भुजाएँ जीर्ण और शरीर क्षीण है; हड्डियाँ ही उसका आधार रह गई हैं। उसके श्रम से समृद्ध होने वाले धनियों के विपरीत उसे अभाव और असहायता मिली है। इसलिए वह ऐसी व्यवस्था के बदलने की प्रतीक्षा करता है जो उसके श्रम और जीवन को नष्ट कर रही है।

चरण 3: स्वागत का कारण और काव्यगत आशय बादल वर्षा द्वारा खेती में प्राण भरते हैं, इसलिए किसान के लिए वे जीविका और नवजीवन के स्रोत हैं। प्रतीकात्मक स्तर पर उनकी गर्जना अन्यायपूर्ण व्यवस्था को बदलने वाली क्रांति की घोषणा है। इस परिवर्तन से उसे शोषण से छुटकारा और बेहतर जीवन की आशा है। इसी कारण उसका स्वागत आशा और उत्साह से भरा है, जबकि धनी वर्ग अपना प्रभुत्व खोने की आशंका से काँपता है।

चरण 4: निष्कर्ष विप्लव के बादल का स्वागत शोषित कृषक और श्रमजीवी वर्ग करता है, क्योंकि वह उनसे वर्षा, नवजीवन तथा शोषणपूर्ण व्यवस्था से मुक्ति की आशा रखता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में वर्ग का नाम, कृषक की दुर्दशा और बादल का क्रांतिकारी प्रतीकार्थ क्रम से जोड़ें।

9(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : 'कैमरे में बंद अपाहिज कविता' कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रघुवीर सहाय की कविता मीडिया द्वारा दुख को प्रदर्शन की वस्तु बनाने पर व्यंग्य करती है।
- संवेदनशील व्यवहार में व्यक्ति की गरिमा और पीड़ा का सम्मान होता है; कविता का संचालक इसका उल्लंघन करता है।

चरण 1: कार्यक्रम संचालक का अमानवीय व्यवहार संचालक दिव्यांग व्यक्ति के अनुभव को समझने के बजाय उससे बार-बार उसकी पीड़ा कहलवाना चाहता है। वह ऐसे प्रश्न करता है जिनसे सामने वाला अपने दुख को तीखे रूप में व्यक्त करे। उसकी कठिनाई और संकोच का सम्मान करने के स्थान पर उसे भावुक होकर रोने की ओर धकेला जाता है। इससे साक्षात्कार सहायता या समझ का माध्यम होने के बजाय मानसिक दबाव का अवसर बन जाता है।

चरण 2: कैमरे द्वारा दुख का प्रदर्शन कार्यक्रम बनाने वालों का उद्देश्य उसकी स्थिति में सुधार करना नहीं, प्रभावशाली दृश्य प्राप्त करना है। कैमरा उसकी व्यथा और आँखों पर केंद्रित किया जाता है ताकि दर्शकों के सामने दुख का मार्मिक चित्र प्रस्तुत हो। एक मनुष्य का आत्मसम्मान कार्यक्रम की सफलता के लिए इस्तेमाल होता है। उसकी वास्तविक पीड़ा दूसरों के लिए देखने और दिखाने की सामग्री बन जाती है।

चरण 3: कविता में निहित व्यंग्य कवि ऐसी बनावटी करुणा पर प्रहार करता है जो सामाजिक सरोकार का दावा करती है, पर पीड़ित की गरिमा की रक्षा नहीं करती। संचालक, कैमरे के पीछे काम करने वाले और इस तमाशे से प्रभावित दर्शक दुख के प्रदर्शन में सहभागी बनते हैं। संवेदनहीनता यह है कि व्यक्ति को समझने और सहारा देने के स्थान पर उसकी असहायता से कार्यक्रम का प्रभाव बढ़ाया जाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता दिखाती है कि कुछ मीडियाकर्मी और दर्शक पीड़ित की गरिमा भूलकर उसके दुख को कार्यक्रम और मनोरंजन की सामग्री बनाते हैं; यही उनकी संवेदनहीनता है।

त्वरित सुझाव: सामान्य मीडिया-आलोचना के बजाय संचालक के प्रश्न, रोने का दबाव और कैमरे द्वारा पीड़ा के प्रदर्शन को आधार बनाएँ।

9(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर दीजिए : भोर के नभ को राख से लीपा चौका क्यों कहा गया है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रभात के आरंभ में आकाश का रंग धूसर और मटमैला दिखाई देता है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और प्रसंग से प्राप्त अर्थ को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: राख से लीपे चौके की समानता शमशेर बहादुर सिंह ने भोर के आकाश को राख से लीपे चौके के समान कहा है। सूर्योदय से पहले आकाश में फैला धुँधला, हलका सलेटी रंग उस चौके की याद दिलाता है जिसे राख से लीपा गया हो। इस उपमान में दोनों की रंगगत समानता मुख्य आधार है।

चरण 2: घरेलू उपमान का सौंदर्य कवि प्रकृति के विराट दृश्य को ग्रामीण घर के परिचित दृश्य से जोड़ देते हैं। राख से लीपा चौका स्वच्छता और ताजगी का बोध भी कराता है। इसलिए इस बिंब से भोर का शांत, निर्मल और ताजा वातावरण साकार होता है। बाद में उभरने वाले रंगों से पहले का यह धूसर रूप सुबह की क्रमशः बदलती रंग-छवियों का आरंभ है।

चरण 3: दृश्य की सजीवता राख की परत में जो हलकी सफेदी मिली हुई धूसरता होती है, वही भोर के धुँधले आकाश में दिखाई देती है। चौके को लीपने से उसकी सतह एक-सी और साफ लगती है; भोर का आकाश भी शांत विस्तार के रूप में उपस्थित होता है। इस तुलना से पाठक केवल रंग का नाम नहीं जानता, बल्कि अपने घरेलू अनुभव के आधार पर आकाश का पूरा दृश्य महसूस कर पाता है। साधारण घरेलू वस्तु का यह चयन कविता को सहज और आत्मीय बनाता है।

चरण 4: निष्कर्ष भोर के धूसर, स्वच्छ और ताजगी भरे आकाश की रंग-समानता राख से लीपे चौके से है; इसी घरेलू दृश्य-बिंब द्वारा कवि ने उषाकाल को मूर्त बनाया है।

त्वरित सुझाव: उपमान बताते समय पहले आकाश का रंग लिखें, फिर चौके से उसकी समानता और बिंब का प्रभाव स्पष्ट करें।

10. नीचे लिखे काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।

आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस॥ [6 अंक]

10(क). काव्यांश का भाव सौंदर्य लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में करुण भाव से आशा और उत्साह की ओर परिवर्तन दिखाया गया है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और प्रसंग से प्राप्त अर्थ को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: राम के विलाप का प्रभाव प्रभु राम का प्रलाप सुनकर वानरों का समूह व्याकुल हो उठता है। उनके हृदय में राम के दुख के प्रति संवेदना है। नायक का शोक समूचे समुदाय का शोक बन जाता है और वातावरण करुणा से भर उठता है।

चरण 2: हनुमान के आगमन का प्रभाव ऐसे दुखपूर्ण वातावरण में हनुमान आ पहुँचते हैं। उनका आगमन आशा, साहस और उत्साह जगाता है। कवि ने इस परिवर्तन को करुण रस के बीच वीर रस के आगमन जैसा बताया है। इससे संकट की निराशा के भीतर सक्रिय पराक्रम की संभावना उभरती है। करुण और वीर भावों का यह विरोधाभास दृश्य की नाटकीयता भी बढ़ाता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में राम के शोक से वानरों की सामूहिक व्याकुलता तथा हनुमान के आगमन से जागते उत्साह का मार्मिक चित्रण है। करुणा और वीरता का यह मेल इसका प्रमुख भाव-सौंदर्य है।

त्वरित सुझाव: भाव-सौंदर्य में पहले वानरों की करुण दशा, फिर हनुमान से उत्पन्न आशा और उत्साह लिखें।

10(ख). काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समान ध्वनि की पुनरावृत्ति अनुप्रास और स्पष्ट समानता उपमा का आधार है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और प्रसंग से प्राप्त अर्थ को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: अनुप्रास के उदाहरण 'बिकल भए बानर' में ब ध्वनि की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है। इस ध्वनिगत आवृत्ति से वाक्य में एक प्रकार का आंतरिक संगीत उत्पन्न होता है और व्याकुल वानर-समूह का वर्णन अधिक प्रभावशाली बनता है। यहाँ ब ध्वनि वानरों की व्याकुलता के कथन को लय प्रदान करती है।

चरण 2: उपमा का उदाहरण 'आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस' में उपमा अलंकार है। हनुमान का आगमन उपमेय, करुण रस के बीच वीर रस का आना उपमान और 'जिमि' उपमावाचक शब्द है। दुख के वातावरण में उत्साह का संचार दोनों के बीच समानता है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में 'बिकल भए बानर' में अनुप्रास तथा 'जिमि करुना महँ बीर रस' में उपमा अलंकार है। ये क्रमशः कथन की लय और भाव-परिवर्तन की प्रभावशीलता बढ़ाते हैं।

त्वरित सुझाव: अलंकार का नाम लिखने के साथ उसके वास्तविक शब्द उद्धृत करें; उपमा में 'जिमि' को अवश्य पहचानें।

10(ग). भाषागत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषा-विशेषताएँ शब्द-रूप, ध्वनि, लय और अभिव्यक्ति से पहचानी जाती हैं।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और प्रसंग से प्राप्त अर्थ को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: अवधी और शब्द-संपदा काव्यांश की भाषा अवधी है। 'सुनि', 'भए', 'आइ गयउ', 'जिमि' और 'महँ' इसके विशिष्ट रूप हैं। 'प्रभु', 'करुना' और 'रस' जैसे शब्द भावों को सहज रूप से व्यक्त करते हैं। भाषा संक्षिप्त होते हुए भी राम के शोक और वानरों की व्याकुलता को स्पष्ट करती है।

चरण 2: लय और चित्रात्मकता पंक्तियों में लयात्मकता तथा गेयता है। 'बिकल भए बानर' की ध्वनि-पुनरावृत्ति नाद-सौंदर्य बढ़ाती है। 'जिमि करुना महँ बीर रस' की उपमा से हनुमान के आने पर वातावरण में आया परिवर्तन चित्रात्मक और प्रभावशाली बनता है। थोड़े शब्दों में दो भिन्न मनोदशाएँ व्यक्त हुई हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सरल, भावपूर्ण अवधी, लयात्मक पद-विन्यास, अनुप्रास की ध्वनि-माधुरी और उपमा की चित्रात्मकता इस काव्यांश की मुख्य भाषागत विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: भाषा के उत्तर में अवधी के वास्तविक शब्द-रूप लिखें और फिर लय तथा अभिव्यक्ति का प्रभाव बताएं।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

इस दंड विधान के भीतर कोई ऐसी धारा नहीं थी जिसके अनुसार खोटे सिक्कों की टकसाल-जैसी पत्नी से पति को विरक्त किया जा सकता। सारी चुगली-चबाई की परिणति, उसके पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी। जिठानियाँ बात-बात पर धमाधम पीटी-कूटी जातीं; पर उसके पति ने उसे कभी उँगली भी नहीं छुआई। वह बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी को पहचानता था। इसके अतिरिक्त परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति रोम-रोम में सच्ची पत्नी को वह चाहता भी बहुत रहा होगा, क्योंकि उसके प्रेम के बल पर ही पत्नी ने अलगौझा करके सबको अँगूठा दिखा दिया। काम वही करती थी, इसलिए गाय-भैंस, खेत-खलिहान, अमराई के पेड़ आदि के संबंध में उसी का ज्ञान बहुत बढ़ा-चढ़ा था। [8 अंक]

11(क). खोटे सिक्के की टकसाल किसे कहा गया है और क्यों? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खोटे सिक्कों की टकसाल का रूपक परिवार की पुत्र-पक्षपाती मानसिकता व्यक्त करता है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और प्रसंग से प्राप्त अर्थ को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: किसके लिए प्रयोग 'खोटे सिक्कों की टकसाल' लछमिन अर्थात भक्तिन को कहा गया है। टकसाल सिक्के बनाने की जगह होती है; यहाँ माँ को टकसाल और उसकी बेटियों को खोटे सिक्कों के समान मानने की संकीर्ण सोच व्यक्त हुई है। यह भक्तिन के वास्तविक गुणों का मूल्यांकन नहीं है।

चरण 2: इस संबोधन का कारण भक्तिन ने बेटियों को जन्म दिया था। पुत्र को अधिक महत्त्व देने वाले परिवार में बेटियों का जन्म तिरस्कार का कारण बना। इसलिए उसे व्यंग्यपूर्वक ऐसा कहा गया। इसके बावजूद गद्यांश बताता है कि वह परिश्रमी, तेजस्विनी और पति के प्रति सच्ची थी तथा उसका पति उससे प्रेम करता था।

चरण 3: निष्कर्ष बेटियों को जन्म देने के कारण लछमिन को 'खोटे सिक्कों की टकसाल' कहा गया है। यह संबोधन बेटियों को कमतर मानने वाली पारिवारिक मानसिकता का परिचायक है।

त्वरित सुझाव: रूपक का अर्थ खोलते समय स्पष्ट करें कि यह परिवार का पूर्वाग्रह है, बेटियों या भक्तिन का वास्तविक दोष नहीं।

11(ख). लछमिन को ग्रामीण जीवन का अधिक ज्ञान क्यों था? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निरंतर श्रम और प्रत्यक्ष भागीदारी से प्राप्त ज्ञान अनुभवजन्य होता है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और प्रसंग से प्राप्त अर्थ को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: काम में सीधी भागीदारी लछमिन घर और खेती से संबंधित काम स्वयं करती थी। गद्यांश में स्पष्ट है कि 'काम वही करती थी'। इसलिए उसका ग्रामीण जीवन से संबंध केवल देखने-सुनने तक सीमित नहीं था, बल्कि वह रोजमर्रा के श्रम और जिम्मेदारियों में सीधे भाग लेती थी।

चरण 2: अनुभव से बढ़ता ज्ञान गाय-भैंसों की देखभाल, खेत-खलिहान के काम और अमराई के पेड़ों से जुड़े कार्यों ने उसका व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाया। लगातार काम करने से उसे इन संसाधनों की दशा और आवश्यकताओं की अच्छी जानकारी थी। इसी कारण परिवार के अन्य सदस्यों की अपेक्षा उसका अनुभव अधिक व्यापक था।

चरण 3: निष्कर्ष लछमिन ग्रामीण जीवन के अधिकांश काम स्वयं करती थी। पशुओं, खेती और अमराई से उसके प्रत्यक्ष तथा निरंतर संबंध के कारण उसे इन विषयों का अधिक व्यावहारिक ज्ञान था।

त्वरित सुझाव: उत्तर को 'काम वही करती थी' से जोड़ें और पशुपालन, खेत-खलिहान तथा अमराई के उदाहरण दें।

11(ग). किन गुणों के कारण पत्नी पति की प्रेम पात्र थी? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में पति का प्रेम पत्नी के श्रम, तेजस्विता और निष्ठा से जुड़ा है।
- उत्तर में पाठ के शब्दों और प्रसंग से प्राप्त अर्थ को क्रमबद्ध रूप में स्पष्ट किया जाता है।

चरण 1: व्यक्तित्व और कर्मशीलता लछमिन परिश्रमी तथा तेजस्विनी थी। वह काम से जी नहीं चुराती थी और आत्मसम्मान के साथ रहती थी। पति उसे 'बड़े बाप की बड़ी बात वाली बेटी' के रूप में पहचानता था। वह उसके व्यक्तित्व की गरिमा और दृढ़ता को समझता तथा उसका सम्मान करता था।

चरण 2: पति के प्रति सच्ची निष्ठा वह पति के प्रति 'रोम-रोम में सच्ची' थी, अर्थात उसके समर्पण और निष्ठा में कोई कमी नहीं थी। परिवार की चुगली-चबाई भी पति को उससे दूर नहीं कर सकी; उलटे उसका प्रेम बढ़ता गया। अन्य स्त्रियों के साथ हिंसा होने पर भी उसने पत्नी को कभी उँगली तक नहीं छुआई।

चरण 3: निष्कर्ष परिश्रम, तेजस्विता, स्वाभिमान और पति के प्रति सच्ची निष्ठा के कारण लछमिन पति की प्रेमपात्र थी। पति उसके गुणों और व्यक्तित्व की गरिमा को पहचानता था।

त्वरित सुझाव: गुणों की सूची के साथ गद्यांश के 'परिश्रमी, तेजस्विनी' और 'रोम-रोम में सच्ची' पदों का आधार दें।

11(घ). अलगौझा किसे कहते हैं? लछमिन ने अलगौझा क्यों करवा लिया? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अलगौझा संयुक्त परिवार की साझी गृहस्थी और संपत्ति से अलग होकर अपनी स्वतंत्र गृहस्थी बसाने को कहते हैं।
- लछमिन का निर्णय पारिवारिक भेदभाव, अपने श्रम के शोषण और पति के सहयोग से जुड़ा है।

चरण 1: अलगौझा का अर्थ अलगौझा में परिवार के सदस्य साझा रहन-सहन, कामकाज और संपत्ति का बँटवारा करके अलग व्यवस्था बना लेते हैं। पाठ में इसका आशय लछमिन और उसके पति के संयुक्त परिवार से अलग होने से है।

चरण 2: लछमिन के निर्णय का कारण लछमिन परिश्रमी थी और घर तथा खेती का अधिकतर काम करती थी, फिर भी बेटियाँ पैदा करने के कारण सास और जिठानियाँ उसे उपेक्षा और तिरस्कार देती थीं। वह इस अन्यायपूर्ण व्यवहार को सहते हुए अपने श्रम का लाभ दूसरों को देते नहीं रहना चाहती थी। पति का प्रेम और विश्वास उसके साथ था। इसी सहारे उसने अलगौझा कराया और अपनी स्वतंत्र गृहस्थी सँभाली। गाय-भैंस, खेत-खलिहान और अमराई की जानकारी होने से उसे अपने बल पर जीवन चलाने का भरोसा भी था।

चरण 3: निष्कर्ष लछमिन ने पारिवारिक भेदभाव और शोषण से मुक्ति पाने तथा आत्मसम्मान के साथ स्वतंत्र गृहस्थी चलाने के लिए अलगौझा कराया।

त्वरित सुझाव: अलगौझा की परिभाषा के बाद लछमिन के साथ होने वाला भेदभाव और पति का समर्थन अवश्य जोड़ें।

12(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : कहानी के किस-किस मोड़ पर लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन की जीवनयात्रा में व्यक्तिगत संघर्ष, राजाश्रय और सामाजिक परिवर्तन परस्पर जुड़े हैं।
- कहानी के मोड़ों को कालक्रम में रखकर उनके कारण और परिणाम स्पष्ट करने चाहिए।

चरण 1: बचपन से पहलवानी तक लुट्टन नौ वर्ष की उम्र में माता-पिता को खोकर अनाथ हो गया। सास ने उसे पाला। गाँव के लोगों के अत्याचारों का बदला लेने के लिए उसने कसरत शुरू की और शरीर बनाया। श्यामनगर के मेले में उसने प्रसिद्ध पहलवान चाँद सिंह को चुनौती दी। ढोलक की लय को मार्गदर्शक मानकर उसने चाँद सिंह को हरा दिया। इससे एक साधारण युवक की पहचान विजेता पहलवान के रूप में बन गई।

चरण 2: राजाश्रय मिलने और छिनने का परिवर्तन विजय से प्रभावित राजा ने उसे दरबार का पहलवान बना लिया। राजाश्रय में उसे सम्मान, अच्छा भोजन और निश्चित जीविका मिली। उसने अपने दोनों बेटों को भी पहलवानी सिखाई। राजा की मृत्यु के बाद नए राजकुमार की रुचियाँ बदल गईं। पहलवान और उसके बेटों का खर्च अनावश्यक समझकर उन्हें राजाश्रय से वंचित कर दिया गया। लुट्टन को गाँव लौटकर अभाव में जीना पड़ा।

चरण 3: महामारी में सहारा और अंतिम संघर्ष गाँव में उसने युवकों को कुश्ती सिखाने की कोशिश की, लेकिन गरीबी में यह व्यवस्था टिक न सकी। अकाल और महामारी के समय उसकी ढोलक भय तथा निराशा से घिरे ग्रामीणों को जीने का साहस देती रही। दोनों बेटों की मृत्यु के बाद भी वह ढोलक बजाकर लोगों का हौसला बढ़ाता रहा। अंत में वह स्वयं भी मृत्यु का शिकार हो गया। इस तरह राजकीय सम्मान पाने वाला पहलवान उपेक्षित होकर भी मानवीय संघर्ष और साहस का प्रतीक बना रहा।

चरण 4: निष्कर्ष अनाथ बालक से राजपहलवान बनना, राजाश्रय छिनना और महामारी में सबको साहस देते हुए मृत्यु पाना लुट्टन के जीवन के प्रमुख मोड़ हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर को बचपन, मेले की विजय, राजाश्रय, निर्वासन और महामारी के क्रम में रखें।

12(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : नमक की पुड़िया ले जाने के सम्बन्ध में सफिया के भावनात्मक लगाव को समझाइए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नमक की पुड़िया जन्मभूमि की स्मृति और मानवीय आत्मीयता का प्रतीक है।
- सफिया का व्यवहार राजनीतिक सीमाओं के पार कायम सांस्कृतिक और भावनात्मक रिश्ते को व्यक्त करता है।

चरण 1: पुड़िया से जुड़ी स्मृति सिख बीबी भारत में रहती थीं, पर उनकी स्मृतियों में लाहौर और वहाँ का जीवन जीवित था। उन्होंने सफिया से लाहौरी नमक लाने को कहा। यह किसी महँगी वस्तु की माँग नहीं थी; अपने पुराने वतन के स्वाद और स्मृति को फिर छू लेने की आकांक्षा थी। सफिया उनकी इस पीड़ा और आत्मीयता को समझती थी, इसलिए नमक पहुँचाना उसके लिए एक भावनात्मक दायित्व बन गया।

चरण 2: पाबंदी के बीच वचन निभाने की इच्छा भारत लौटते समय सफिया को पता चलता है कि नमक सीमा पार ले जाना प्रतिबंधित है। फिर भी वह केवल नियम और वस्तु के मूल्य के आधार पर इस आग्रह को छोड़ नहीं देती। उसे लगता है कि नमक न ले जाना बीबी के विश्वास और उनके वतन-प्रेम को ठेस पहुँचाना होगा। इसी कारण वह पुड़िया को सुरक्षित ले जाने की चिंता करती है। उसके मन का संघर्ष नमक के प्रति लोभ नहीं, एक प्रिय व्यक्ति से किए वादे को निभाने की बेचैनी है।

चरण 3: मानवीय संबंधों का व्यापक अर्थ अंततः कस्टम अधिकारियों से बातचीत में जन्मभूमि के प्रति ऐसी ही आत्मीयता सामने आती है। सफिया के लिए नमक मनुष्यों को जोड़ने वाला माध्यम बन जाता है। देश बँट जाने पर भी स्मृतियाँ, स्वाद, भाषा और अपनापन नहीं बँटते। उसकी संवेदना सिख बीबी के व्यक्तिगत अनुरोध को दोनों देशों के लोगों की साझी मानवीय अनुभूति से जोड़ देती है।

चरण 4: निष्कर्ष सफिया नमक की पुड़िया में सिख बीबी का विश्वास, लाहौर की स्मृति और बँटवारे से परे जीवित मानवीय आत्मीयता देखती है।

त्वरित सुझाव: नमक को केवल वस्तु न कहें; बीबी की जन्मभूमि की स्मृति और सफिया के वचन से उसका संबंध समझाएँ।

12(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'बाज़ार का जादू' चढ़ने और उतरने का मनुष्य पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बाज़ार का जादू आकर्षक सजावट और वस्तुओं की बहुलता से पैदा होता है।
- लेखक आवश्यकता की स्पष्ट पहचान को अनावश्यक खरीदारी से बचने का साधन मानते हैं।

चरण 1: जादू चढ़ने का प्रभाव बाज़ार की चमक-दमक, सजी हुई दुकानें और आकर्षक वस्तुएँ मनुष्य को मोह लेती हैं। उसे अपना जीवन वस्तुओं के अभाव में अधूरा लगने लगता है। जिन चीजों की उसे वास्तविक आवश्यकता नहीं होती, उन्हें भी पाने की इच्छा जाग उठती है। क्रयशक्ति होने पर वह इस आकर्षण में विवेक खोकर बहुत-सा सामान खरीद लेता है। इस प्रकार बाज़ार मन को चंचल बनाकर तृष्णा और असंतोष बढ़ाता है।

चरण 2: जादू उतरने का प्रभाव घर पहुँचकर या आकर्षण कम होने पर व्यक्ति को खरीदे हुए सामान की वास्तविक उपयोगिता का पता चलता है। अनेक वस्तुएँ अनावश्यक दिखाई देती हैं। तब उसे लगता है कि क्षणिक मोह में वह बाज़ार के आकर्षण का शिकार बन गया। खर्च किए हुए धन और व्यर्थ जुटाई वस्तुओं को देखकर खीझ, पछतावा तथा असंतोष होता है। जिस सामान ने खरीदते समय सुख का वादा किया था, वही बाद में बोझ लग सकता है।

चरण 3: लेखक का व्यावहारिक संकेत लेखक के अनुसार बाज़ार जाने से पहले मन में अपनी आवश्यकता स्पष्ट होनी चाहिए। खाली या अस्थिर मन बाज़ार के जादू में जल्दी फँसता है। निश्चित जरूरत वाला व्यक्ति उपयोगी वस्तु चुनता है और बाकी आकर्षण से बच सकता है। भगत जी जैसे संयमी व्यक्ति इसीलिए बाज़ार की चकाचौंध से अप्रभावित रहते हैं। आवश्यकता और इच्छा के अंतर को समझना ही

इस प्रभाव से बचने का उपाय है।

चरण 4: निष्कर्ष बाज़ार का जादू चढ़ने पर अनावश्यक वस्तुओं की लालसा और खरीद बढ़ती है; उतरने पर उनकी निरर्थकता समझ में आती है और खीझ तथा पछतावा होता है।

त्वरित सुझाव: चढ़ने पर लालसा और खरीद, उतरने पर अनुपयोगिता और पछतावा—इन दोनों अवस्थाओं को अलग समझाएँ।

12(घ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 'सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा' – 'काले मेघा पानी दे' पाठ में जीजी के इस तर्क पर टिप्पणी कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी लोकविश्वास के माध्यम से त्याग, दान और सामूहिक कल्याण का महत्त्व समझाती हैं।
- यथा प्रजा तथा राजा का तर्क नागरिकों और शासकों के आचरण के संबंध को रेखांकित करता है।

चरण 1: प्रसंग और जीजी का तर्क लेखक पानी की कमी के समय इंदर सेना पर पानी उड़ेलने को पानी की बरबादी मानते हैं। जीजी इसे दान और त्याग की भावना से देखती हैं। उनके अनुसार संकट में भी अपना कुछ अंश देना बड़े लाभ और सामूहिक कल्याण का आधार बनता है। जैसे अच्छी फसल के लिए किसान पहले बीज भूमि में छोड़ता है, वैसे ही पाने से पहले देना सीखना चाहिए। इसी विचार के साथ वे जनता और राजा के आचरण का संबंध जोड़ती हैं।

चरण 2: प्रजा के आचरण की जिम्मेदारी सामान्यत: कहा जाता है कि राजा जैसा होता है, प्रजा भी वैसी होती है। जीजी बात उलटकर कहती हैं कि प्रजा जैसी होगी, राजा भी वैसा ही होगा। यदि लोग स्वयं स्वार्थी हों, केवल लेने की इच्छा रखें और सार्वजनिक हित में योगदान न दें, तो शासकों से त्याग तथा उदारता की अपेक्षा अधूरी है। शासन की कमियों पर शिकायत करने के साथ लोगों को अपने व्यवहार में भी सहयोग और जिम्मेदारी लानी चाहिए।

चरण 3: तर्क पर टिप्पणी जीजी का तर्क जनता की नैतिक जिम्मेदारी की ओर ध्यान दिलाता है। अच्छा समाज बनाने में केवल शासन ही नहीं, सामान्य नागरिकों की सहभागिता भी आवश्यक है। आज के संदर्भ में जल-संरक्षण, संसाधनों का न्यायपूर्ण उपयोग और जनहित में योगदान इस भावना के व्यावहारिक रूप हैं। वर्षा होने के लिए पानी बहाने को वैज्ञानिक कारण नहीं माना जा सकता, लेकिन जीजी के कथन का मूल संदेश परस्पर सहयोग और नि:स्वार्थ दान है।

चरण 4: निष्कर्ष जीजी का तर्क बताता है कि उदार और उत्तरदायी शासन की अपेक्षा के साथ जनता को भी स्वार्थ छोड़कर सामूहिक हित में त्याग तथा सहयोग करना चाहिए।

त्वरित सुझाव: कथन को केवल राजा की आलोचना न बनाएँ; नागरिकों के आचरण और जीजी के दान-संदेश से जोड़ें।

12(ङ). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए : "हाय वह अवधूत आज कहाँ है" ऐसा कहकर लेखक ने आत्मबल पर देहबल के वर्चस्व की वर्तमान सभ्यता के संकट की ओर संकेत किया है। कैसे? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत सांसारिक मोह, भय और स्वार्थ से ऊपर उठकर स्वतंत्र भाव से जीने वाला व्यक्ति है।
- आत्मबल का आधार सत्य, करुणा और नैतिक साहस है; देहबल बाहरी शक्ति और दमन का प्रतीक है।

चरण 1: कथन का प्रसंग और अवधूत का आदर्श हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष की विपरीत परिस्थितियों में भी खिलते रहने की क्षमता में अनासक्ति और मस्ती देखते हैं। अवधूत भी सुख-दु:ख से विचलित हुए बिना अपना स्वभाव बनाए रखता है। पाठ के अंत में गांधीजी का स्मरण इसी आत्मबल के कारण होता है। हिंसा और सांप्रदायिक तनाव के बीच भी उन्होंने सत्य, अहिंसा और प्रेम पर विश्वास बनाए रखा।

चरण 2: वर्तमान सभ्यता का संकट आधुनिक सभ्यता बाहरी शक्ति, शारीरिक सामर्थ्य और भौतिक साधनों को अधिक महत्त्व देती है। बल के सहारे दूसरों को दबाने की प्रवृत्ति बढ़ने पर करुणा, सहिष्णुता और नैतिकता कमजोर पड़ती हैं। ऐसे वातावरण में मनुष्य आत्मबल से अन्याय का प्रतिरोध करने के बजाय हिंसा और भय का सहारा लेने लगता है। गांधीजी जैसा व्यक्ति दिखाता है कि सच्ची शक्ति हथियार या शरीर में नहीं, निर्भय और सत्यनिष्ठ आत्मा में होती है। लेखक की व्यथा ऐसे नैतिक नेतृत्व के अभाव को लेकर है।

चरण 3: निष्कर्ष "हाय वह अवधूत आज कहाँ है में गांधीजी जैसे अनासक्त, अहिंसक और आत्मबली व्यक्तित्व की कमी की पीड़ा है। लेखक देहबल के बढ़ते प्रभुत्व के सामने सत्य, प्रेम और नैतिक साहस की पुनः प्रतिष्ठा चाहते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में अवधूत की अनासक्ति, गांधीजी का आत्मबल और आधुनिक सभ्यता की हिंसक शक्ति-प्रवृत्ति को आपस में जोड़िए।

13. आपके विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक तथा दत्ता जी राव का रवैया सही था या लेखक के पिता का? जीवन-मूल्यों के संदर्भ में तर्क सहित उत्तर दीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिक्षा आत्मनिर्भरता, विवेक और व्यक्तित्व-विकास का साधन है।
- जीवन-मूल्यों के आधार पर किसी दृष्टिकोण का मूल्यांकन करते समय परिश्रम, उत्तरदायित्व और समान अवसर का ध्यान रखना चाहिए।

चरण 1: लेखक और दत्ता जी राव के दृष्टिकोण का मूल्यांकन मेरे विचार से पढ़ाई-लिखाई के संबंध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था। लेखक शिक्षा प्राप्त करके अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों से बाहर निकलना चाहता था। उसे अनुभव हो गया था कि केवल खेत के काम में उलझे रहने से उसकी उन्नति के अवसर सीमित रहेंगे। पढ़ने की इच्छा उसके भीतर भविष्य सुधारने की आकांक्षा, आत्मसम्मान और ज्ञान के प्रति लगाव का प्रमाण थी। वह श्रम से बचने के लिए विद्यालय नहीं जाना चाहता था; खेती के काम के साथ पढ़ने की कठिन शर्त स्वीकार करना उसके परिश्रम और दृढ़ निश्चय को स्पष्ट करता है।

चरण 2: सहयोग और अभिभावकीय जिम्मेदारी दत्ता जी राव ने बालक की प्रतिभा और शिक्षा की आवश्यकता को पहचाना। उन्होंने पिता को समझाकर उसकी पढ़ाई फिर शुरू कराने में सहायता की। उनका व्यवहार संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व का उदाहरण है। शिक्षा के लिए संघर्ष कर रहे बच्चे को उचित अवसर दिलाना उसके भविष्य के साथ न्याय करना है। इसके विपरीत पिता बेटे को खेत के काम में लगाकर तत्काल लाभ चाहते थे। परिवार की आर्थिक जरूरतों का महत्त्व है, किंतु उनके कारण बच्चे के सीखने के अधिकार और विकास को पूरी तरह रोकना उचित नहीं है। अभिभावक का कर्तव्य केवल काम लेना नहीं, संतान को सक्षम और विवेकशील बनाना भी है।

चरण 3: पाठ से पुष्ट जीवन-मूल्य लेखक विद्यालय पहुँचकर लगन से पढ़ता है और कविता के प्रति रुचि विकसित करता है। यह दिखाता है कि अवसर मिलने पर उसकी भीतरी क्षमताएँ सामने आती हैं। उसका संघर्ष श्रम और शिक्षा के बीच शत्रुता नहीं, दोनों का संतुलन सिखाता है। यदि पिता का रवैया ही स्वीकार कर लिया जाता, तो उसकी रचनात्मक प्रतिभा दब सकती थी। इसलिए दत्ता जी राव का प्रोत्साहन और लेखक की जिजीविषा दूरदर्शिता, सहानुभूति तथा आत्मनिर्भरता जैसे मूल्यों को प्रतिष्ठित करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक और दत्ता जी राव का दृष्टिकोण जीवन के व्यापक हित में सही था। शिक्षा के अवसर देकर ही बच्चे को श्रमशील होने के साथ आत्मनिर्भर, संवेदनशील और प्रतिभाशाली नागरिक बनने में सहायता दी जा सकती है।

त्वरित सुझाव: अपने मत को केवल सही या गलत कहकर न छोड़ें; खेत के काम की शर्त, शिक्षा की लगन और दत्ता जी राव के सहयोग से तर्क पुष्ट करें।

14(क). "टूटे-फूटे खंडहर सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुये पहलुओं के जीवंत दस्तावेज भी होते हैं।" कैसे? 'अतीत में दबे पाँव' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक अवशेष प्राचीन समाज की व्यवस्था के साथ सामान्य लोगों के दैनिक जीवन की जानकारी भी देते हैं।
- पाठ में मोहनजोदड़ो की गलियाँ, घर और वस्तुएँ बीते हुए जीवन की मानवीय उपस्थिति का अनुभव कराती हैं।

चरण 1: नगर-रचना में जीवन की पहचान ओम थानवी के यात्रा-वृत्तांत में मोहनजोदड़ो केवल इतिहास की कोई तिथि या पुरानी ईंटों का ढेर नहीं है। उसकी गलियाँ, मकान और आँगन एक बसे हुए नगर का अनुभव कराते हैं। व्यवस्थित सड़कें, नालियाँ, कुएँ तथा स्नान की व्यवस्थाएँ बताती हैं कि वहाँ के लोग स्वच्छता, सुविधा और सामूहिक जीवन के प्रति सजग थे। घरों की बनावट से उनके रहन-सहन और घरेलू जीवन की कल्पना होती है। इन अवशेषों से इतिहास राजाओं और युद्धों के विवरण से आगे बढ़कर साधारण नागरिकों की जरूरतों और सामाजिक समझ तक पहुँचता है।

चरण 2: वस्तुओं में रुचियों और संबंधों के संकेत यहाँ मिले बर्तन, खिलौने, आभूषण, मूर्तियाँ और मुहरें लोगों की कला-दृष्टि, श्रम और दैनिक व्यवहार के प्रमाण हैं। खिलौने बाल-जीवन की ओर संकेत करते हैं, आभूषण सजने की रुचि को प्रकट करते हैं और बर्तन घरेलू कामकाज का बोध कराते हैं। नर्तकी की प्रतिमा जैसी कलाकृतियाँ सौंदर्यबोध तथा कलात्मक दक्षता की जानकारी देती हैं। इस प्रकार छोटी वस्तुएँ भी उन अनाम लोगों की उपस्थिति दर्ज करती हैं जिनके नाम लिखित इतिहास में सुरक्षित नहीं हैं।

चरण 3: खंडहरों का जीवंत दस्तावेज होना लेखक इन स्थलों पर चलते हुए बीते हुए जीवन के अत्यंत निकट पहुँचता है। खाली घर और सूनी गलियाँ यह अनुभव जगाते हैं कि यहाँ कभी लोग रहते, काम करते और अपने परिवारों के साथ जीवन बिताते थे। पाठ की विशेषता यह है कि सभ्यता की भव्यता के साथ उसके मानवीय और सहज रूप पर ध्यान दिया गया है। नगर के प्रमाणित अवशेष कल्पना को आधार देते हैं; उनसे तत्कालीन जीवन की अनकही परतें खुलती हैं। इसलिए खंडहरों को केवल टूटे निर्माण समझना उनके सांस्कृतिक और मानवीय अर्थ को सीमित कर देना होगा।

चरण 4: निष्कर्ष मोहनजोदड़ो के खंडहर नगर-व्यवस्था और संस्कृति के इतिहास के साथ सामान्य मनुष्यों के श्रम, रुचियों और घरेलू जीवन के साक्ष्य भी हैं। इसी कारण वे बीते युग की धड़कती जिंदगियों के जीवंत दस्तावेज कहलाते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में नगर-योजना और घरेलू वस्तुओं के ठोस उदाहरण देकर बताइए कि उनसे लोगों के जीवन का कौन-सा पक्ष सामने आता है।

14(ख). यशोधर बाबू के जीवन को दिशा देने में किसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी? कैसे? [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मनोहर श्याम जोशी की कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में यशोधर बाबू के व्यक्तित्व पर किशन दा के संस्कारों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।
- चरित्र के निर्माण में आश्रय, आत्मीय मार्गदर्शन और आदर्श आचरण की भूमिका को घटनाओं के आधार पर स्पष्ट करना आवश्यक है।

चरण 1: जीवन को दिशा देने वाले व्यक्ति की पहचान यशोधर बाबू के जीवन को दिशा देने में किशन दा की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। यशोधर बाबू कम उम्र में ही माता-पिता के संरक्षण से वंचित हो गए थे। पढ़ाई के बाद जब वे आजीविका की तलाश में दिल्ली आए, तब किशन दा ने उन्हें सहारा दिया। नए शहर में मिला यह आत्मीय आश्रय उनके लिए केवल रहने की सुविधा नहीं था; इससे उन्हें जीवन सँभालने का आधार और एक बड़े-बुज़ुर्ग का संरक्षण मिला। इसी कारण उनके मन में किशन दा के प्रति आजीवन श्रद्धा बनी रही।

चरण 2: व्यावहारिक सहायता और आत्मनिर्भरता की सीख किशन दा ने यशोधर बाबू को अपने साथ रखा और नौकरी दिलाने में सहायता की। यशोधर बाबू ने उनके यहाँ भोजन बनाने जैसे घरेलू काम भी सीखे। इस प्रकार किशन दा ने उन्हें शहर में टिकने, अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने और नियमित जीवन जीने योग्य बनाया। उनके सान्निध्य में यशोधर बाबू ने सादगी, परिश्रम, अनुशासन और अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा को महत्त्व देना सीखा। यह सहायता किसी क्षणिक उपकार तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनके पूरे जीवन के आचरण का

आधार बनी।

चरण 3: संस्कारों और दृष्टिकोण पर स्थायी प्रभाव किशन दा का व्यवहार आत्मीय और दूसरों की सहायता करने वाला था। यशोधर बाबू ने उनसे बिरादरी और परिचितों से संबंध बनाए रखना, सुख-दुख में सम्मिलित होना तथा परंपरागत सामाजिक दायित्व निभाना सीखा। किशन दा की 'समहाउ इम्प्रॉपर' कहकर किसी बात पर अपनी असहमति प्रकट करने की शैली भी यशोधर बाबू की सोच में बस गई। बदलते समय की नई जीवन-पद्धति को परखते हुए वे बार-बार अपने पुराने आदर्शों की ओर लौटते हैं। परिवार की आधुनिक रुचियों और अपनी मान्यताओं के बीच उनका द्वंद्व भी इसी संस्कारगत प्रभाव से जुड़ा है। इसलिए किशन दा उनके लिए संरक्षक के साथ जीवन-आदर्श भी थे।

चरण 4: निष्कर्ष किशन दा ने आश्रय, नौकरी में सहायता, घरेलू जीवन की सीख और नैतिक-सामाजिक संस्कार देकर यशोधर बाबू के जीवन को दिशा दी। उनके प्रति यशोधर बाबू की गहरी श्रद्धा बताती है कि किशन दा का प्रभाव उनकी आदतों, मूल्यों और जीवन-दृष्टि में स्थायी रूप से बना रहा।

त्वरित सुझाव: उत्तर में किशन दा का नाम बताकर आश्रय, नौकरी, आत्मनिर्भरता और संस्कार—इन चार पक्षों को कहानी की घटनाओं से जोड़ें।